Rs. 5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ

Auguast' 2008

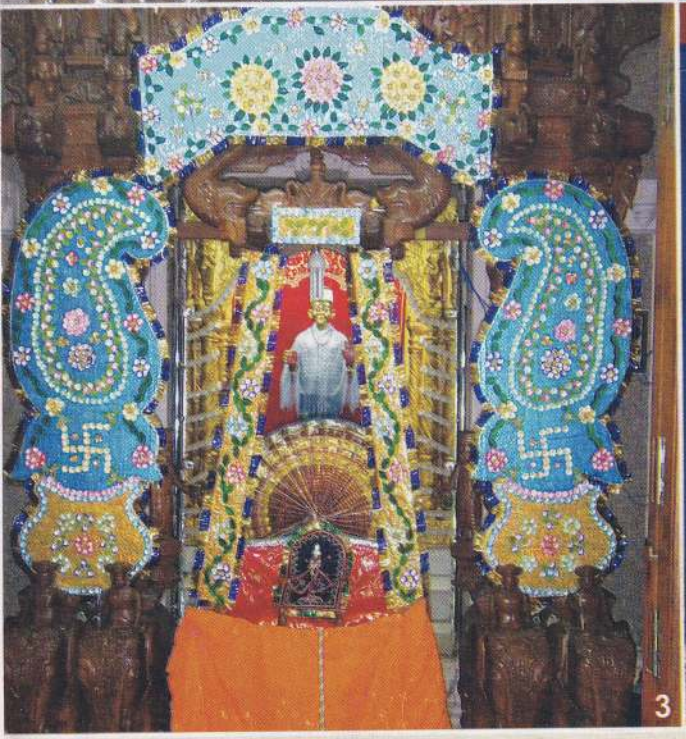


ગુરુપૂર્ણિમા પ્રસંગે સભામાં દર્શન આપતા પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી અને પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી.

પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧. • Publisher : Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1.









अपने श्री स्वामिनारायण मंदिरोंमें श्रावण मास में झूलों का अलौकिक दर्शन

१. अहमदाबाद २. जेतलपुर ३. नारायणघाट ४. गांधीनगर (सेक्टर-२३)

नये वर्ष के केलेन्डर सौजन्य के विषय में

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद (कालुपुर) की तरफ से ठाकुरजी का आकर्षक, सुन्दर नूतन वर्षना कलन्डर तैयार हो गया है। जिस में उद्योगपति, बडे व्यापारी हरिभक्तों को सूचना है कि धन्धा उद्यो की प्रसिद्धि के लिये "सौजन्य" हेतु सम्पर्क कर सकते हैं।

- महंत स्वामी, श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद तथा श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम नारायणपुरा,
अहमदाबाद. फोन : २७४१९५९७,
९८२५३०९५९७ फेक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - २ अंक : १६ अगस्त -२००८

अनुक्रमणिका

१	अस्मदीयम	०२
२	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	०३
३	जन्माष्टमी	०४
४	पवित्र बंधन अर्थात् रक्षा बंधन	०५
५	समझदार को उपदेश	०६
६	भक्ति की सर्वोपरिता	०७
७	गुरु पूर्णिमा के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का शुभाशीर्वाद	०९
८	अक्षरधाम की पगडंडी अर्थात् श्री स्वामिनारायण म्युझियम	१०
९	सत्संग सुरभि	१२
१०	सत्संग बालवाटिका	१३
११	भक्तिसुधा	१५
१२	हमारे प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री	१८
१३	प्रश्न पेटी ???	२०
१३	सत्संग समाचार	२१

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१
से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्



इन्द्रियों को विषयों के उपभोग का चसका लगा है। तब उस समय पंच विषयों को त्यागना बड़ा कठिन होता है। निष्कुलानंद स्वामी के शब्दो में कहना हो तो "त्याग ना टके रे वैराग्य विना" इसी तरह वैराग्य के विना त्याग टिक नही सकता . वैराग्य की दृढता के बिना अंत:करण दृढ (स्थिर) नहीं हो सकता। करोड़ो उपाय करने के बाद भी त्याग-धर्म-नियम रुकता नहीं है। केवल इन्द्रियों को उनके विषयों से दूर रखना सरल है। कोई भी मनुष्य स्वयं को एकांत में रखकर अलग हो सकता है, परंतु उसका अलगाव उसके शरीर से संबन्धित भौतिक एकांत मात्र कहा जा सकता है। मात्र एकांत का सेवन करने से इन्द्रियां वश में नहीं होती। इसके लिये मन को वश में करना आवश्यक है। मन को विषयों से अलग न करें तो एकांत में रहने पर भी जीवात्मा का पतन होता है। इन्द्रियों को जीतकर जितेन्द्रिय होकर मन को धीरे-धीरे वश में करते रहना चाहिये। वैराग्य की भावना को अपने मन में निश्चय करके दृढ करना चाहिये।

उसी मन को वश में करने के लिये चातुर्मास या श्रावण मास या उत्सव आते हैं। जिसमें विशेष नियम पालन करने के लिये श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री में आज्ञा की है। परंतु वैराग्य के लिये मानसिक चाहना जीवन में उत्पन्न हो इसके लिये नित्य-अनित्य, शाश्वत-अशाश्वत, सत्य-असत्य, विवेक-अविवेक की सत्य समझ को सत्पुरुषों का समागम करके कथा के माध्यम से आत्मसात करना चाहिये। इसके लिये चातुर्मास तथा श्रावण मास के विविधउत्सवों में ज्ञान, वैराग्य, भक्ति की दृढता करने के लिये सुन्दर योग्य समय है।

इन्द्रियों का अपने विषय में प्रवाह न हो इसके लिये मन को इन्द्रियों से हटाते रहना चाहिये। इन्द्रियों के दमन से ही मन की स्थिरता, दृढता संभव है। बाह्य जगत का जो शारीरिक एवं भौतिक सुख हो धीरे धीरे उससे उपरत होकर आत्मसंयम के मार्ग पर चलना श्रेयष्कर है। ज्ञान मार्ग मात्र इतना ही नहीं है बल्कि नित्य संत समागम द्वारा ज्ञान प्राप्त करके जिन विषयों को इन्द्रियों द्वारा जीवात्मा सुख भोगता है उसे मिथ्या समझना चाहिये। जीवात्मा कभी भी इन्द्रियों द्वारा विषय सुख भोगकर तृप्त नहीं होता। कारण यह कि अनंत जन्मों से विषयों का सुख भोगते आ रहा है। फिर भी सुख की पूर्णता कहां होती है। विषय भोग से तो जीवात्मा का मन तथा शरीर दोनो ही निस्तेज हो जाते है, जिससे उसका पतन होता है। आत्मा का शास्वत सुख तो प्रभु के चरण में ही है। ऐसी समझ चातुर्मास, अधिकमास, श्रावण मास में श्रीहरिने निश्चित किया है। ऐसे समय में इष्टदेव का विशेष भजन स्मरण करके मोक्ष तथा कल्याण सिद्ध करलेना चाहिये। यही मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
-साधु नारायणस्वरुपदास का
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जूलाई -२००८

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर खोखरा के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२. श्री सहजानंद ट्रावेल्स एजेन्सी में पदार्पण, नेहरुनगर।

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षदकोलोनी के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री भगवानभाई गंगदासभाई आकोलिया के यहाँ पदार्पण, बापूनगर।
श्री भाविनभाई दुर्लभभाई सावलिया के यहाँ पदार्पण, निकोल रोड।
श्री रमेशभाई रवजीभाई दोगा के यहाँ पदार्पण, बापूनगर।
श्री तेज बचूभाई बड़ोदरिया के यहाँ पदार्पण, निकोल।
श्री राजेन्द्रकुमार एम. के यहाँ पदार्पण, राणीप।

६. श्री विनोदभाई मोहनलाल प्रजापति के यहाँ पदार्पण, घोड़ासर।

७. श्री नंदलाल दयालभाई पीठवा के यहाँ पदार्पण (महापूजामें) पालड़ी।

१०. श्री गोकुलेश नारायणभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, घोड़ासर।

११. श्री नरेन्द्रसिंह महेन्द्रसिंह चावड़ा (दरबार) के यहाँ पदार्पण, बोपल।
श्री समीरभाई रमणलाल परीख के यहाँ पदार्पण, जशोदा चौकड़ी वटवा।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में संत-हरिभक्तों द्वारा गुरु पूर्णिमा के प्रसंग पर गुरु पूजन महोत्सव सम्पन्न।

१९. श्री जीलूभाई भईजीभाई डाभी (जवारजवाला) के यहाँ पदार्पण, बोपल।

२०. श्री जतीनभाई रसिकभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, मणीनगर।
श्री महेन्द्रभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण घोड़ासर।
श्री परेशभाई सोमाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, खोखरा-अहमदाबाद।

विदेश धर्मयात्रा

ता. २४-७-२००८ से ता. १०-८-२००८

अपने शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर दशाब्दी महोत्सव केनेडा टोरन्टो में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के वेबसाईट

www. swaminarayanmusgum.com

के वीडियो विभाग में 'श्री नरनारायणदेव के पांचों आरती का दर्शन होगा।

जन्माष्टमी

- कोठारी स्वामी रामानुजदासजी

महा कवि कालिदासने "उत्सव प्रियाः खलु मनुष्याः ।" यह उचित ही कहा है। उत्सवों के पीछे भाव का महत्व है। अंतःकरण की भावना से तथा सार ग्रहण करने वाली बुद्धि से यदि उत्सव मनाया जाय तो वह जीवन में आनंद का निर्माण करता है। निराशावादी सिद्धांत को हटाकर आशाओं का संचार करना चाहिये। भारत की संस्कृति का धार्मिक इतिहास मात्र पुस्तकों में ही है ऐसा नहीं बल्कि तत्कालीन उत्सवों से भी प्रगट किया गया है। उत्सवों के अंदर की भावना को देखें तो तथा उसके रहस्य का चिंतन करें तो पूर्वजो के प्रति आदर से मस्तक झुकजाता है। उत्सव आत्मीयता का साधक, प्रेम का पोषक, प्रसन्नता का प्रेरक तथा धर्म का संरक्षक एवं भावना का संबर्धन करने वाला है। प्रतिदिन के जीवन में से उत्सव हमें मुक्ति प्रदान करता है। कारण यह कि धंधा व्यापार तथा शुष्क जीवनव्यवहार में लगे रहने से, उत्सव के दिन मुक्ति मिलने का एहसास होने लगता है। धर्म में उत्सव, आने वाली पीढी को मार्गदर्शन तथा पथ प्रशस्त करता है। महान बनने का संदेशा भी देता है। जीवन को कौन सी दिशा दी जाय यह उत्सव से सीखने को मिलता है।

भगवान के प्रागट्य को भी भक्त लोग उत्सव के रुप में मनाते है। भगवान तो अजन्मा हैं फिर भी अपने भक्तों को प्रेम पूर्वक शुभमनोरथ को पूर्ण करने के लिये स्वतंत्र रुप से जन्म लेकर मृत्यु लोक में प्रगट होते हैं। परमात्मा माया से निर्लेप होकर अनेक जीवात्माओं को माया से निर्लिप्त करके जन्म मरण के सम्बन्धसे रहति करके अक्षरधाम में लेजाकर शाश्वत सुख का अधिकारी बनाते हैं। इससे अक्षरधाम के अलौकिक सुख की प्राप्ति के लिये भक्त लोग भगवान की प्रसन्नता के लिये जन्म एवं कर्म दोनो प्रकार के उत्सव मनाकर अभयदान प्राप्त करते हैं। भगवान का प्रागट्य भी विश्व कल्याण के लिये होता है।

भागवतजी के दशम स्कन्धमें परमकृपालु श्री कृष्ण भगवान की कथा आती है। भगवान श्रीकृष्ण भी श्रावण कृष्ण अष्टमी की मध्य रात्रि में अर्थात् घोर अंधकार में प्रकाश को फैलाने के लिये मथुरा की जेल में बंदी माता देवकी की कोंख से तथा पिता वसुदेव से प्रगट होते हैं।

मथुरा अर्थात् मानव की शरीर, वसुदेव अर्थात् मनुष्य की जीवात्मा, देवकी अर्थात् मनुष्य में विद्यमान बुद्धि। यदि मानव अन्तःकरण पूर्वक हृदय में विद्यमान भगवान के साक्षात्कार हेतु प्रयत्न करे तो बुद्धि तथा मन मनुष्य की चाहना करता है कि हे प्रभु जब-जब जगत के ऊपर धर्म तथा अध्यात्म का मार्ग अधर्म रुपी अंधकार से आवृत हुआ है तब-तब अज्ञानरुपी अंधकार को नष्ट करने के लिये पूर्ण प्रकाश रुपी भगवान का प्रागट्य हुआ है। जब पृथ्वी पर आपत्तियों का वरसात; अंधश्रद्धा, पाखंड तथा प्रदर्शन का मेघाडंबर छाता है. तब अधर्मरुपी अंधकार को दूर करने के लिये पूर्ण प्रकाश रुपी भगवान का प्रागट्योत्सव मनाया जाता है।

भगवान अवतार धारण करके जो-जो चरित्र करते हैं वह दिव्य होता है तथा चरित्र का ज्ञान करने से जीवात्मा मोक्ष को प्राप्त करता है, इसलिये शांति की चाहना वाले प्रत्येक व्यक्ति अपने मन को भगवान की कथा-कीर्तन तथा ध्यान में लगा दे। भगवान के प्रत्येक चरित्र कोई न कोई उपदेश देते रहते हैं। हम भी भगवान श्रीकृष्ण की जन्म जयंती के अवसर पर प्रभु के चरित्रों में से ज्ञान प्राप्त करके जीवन को क्रियात्मक बनावें।

- जिस समय धर्म के सिद्धान्त जीवन में नहीं अपितु पुस्तकों तक सीमित रहने लगते हैं तथा धर्म को धर्मान्धता में से एवं शिक्षण तथा राजसत्ता के कैद में से मुक्त करने के लिये प्रभुका जेलणाने में से इस पृथ्वी पर आने का प्रसंग यथार्थतः सार्थक है।

- गोवर्धन लीला द्वारा प्रभु हमे समझाते हैं कि जगत के जीवों की सत्ता या संपत्ति से नही; धनवालों की पूजा से नही, बल्कि वेदपुराण श्रुति, स्मृतियों के विचारों से जगत में सुख प्रदान करने वाले विद्वान संतादिक के पूजन में समाया हुआ है ऐसा समझना चाहिये।

- सत्ता तथा संपत्ति वाले इन्द्र के अभिमान को तोड़ कर सामान्य मनुष्य की तरह एकात्मभाव की सीख देने का महान कार्य बताया गया है।

- गोकुल के सामान्य ग्वाल-बाल तथा सामान्य घर की गोपियों के साथ समानता का भाव बताकर गोपालकृष्ण नाम सार्थक किये हैं। सभी को सखाभाव से मानते थे।

- जहाँ पूज्य लोगों की अवगणना हो वहाँ दुकाल, मरण, भय इन तीनों का साम्राज्य होता है।

अनुसंधान पृष्ठ - १७ पर...

पवित्र बंधन अर्थात् रक्षा बंधन

- साधु धर्मकिशोरदास गुरु स्वामी नारायणस्वरुपदासजी

"स्नेहथी खिले जीवन नी पांखडी,
राखडी, स्नेहतड़ी बाराखडी ॥"

रक्षाबंधन अर्थात् प्रेम का बंधन, आज के दिन बहन भाई को राखी बांधती है। इसके साथ हृदय को प्रेम के बंधन में बांधती है। भाई बहन का मिलन अर्थात् पराक्रम तथा प्रेम, साहस एवं संयम का सहयोग। रक्षाबंधन स्वार्थ की परछाई से अंकित ऐसे जगत के सभी संबन्धो के बीच, निःस्वार्थ एवं पवित्र ऐसाभाई बहन का सच्चा प्रेम, जैसे खारे समुद्र के बीच मिठास को देने वाला एक आश्चर्य कारक बन्धन है। भारतीय संस्कृति तथा उसके प्रवर्तक ऋषियों ने इस संबन्धसे निःस्पृहता एवं पवित्रता का गान किया है। भारतीय संस्कृति अर्थात् मनवजीवन की महानता का प्रत्यक्ष दर्शन इस बंधन में समाया हुआ है। नारी संस्कृति, स्त्री को भोगदासी नहीं समझती, इसका पूजन करने वाली संस्कृति अपने को सुधारक कहकर पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर रही है। स्त्री समानता की बात करने वालों को नम्रता पूर्वक कहना चाहिये कि भारत की संस्कृतिने तो स्त्रियों की पूजा की है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवताः।

जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता लोग रमण करते हैं, आनंद की अनुभूति होती है, देवी-देवता सभी का वास होता है। यह भगवान मनु का वचन है। स्त्री को भोग की दृष्टि से नहीं देखना चाहिये। उसे मान-सम्मान के साथ देखने का आदेश भारतीय संस्कृति करती है।

रक्षा बंधन का उत्सव अर्थात् दृष्टि परिवर्तन का त्यौहार। बहन की राखी हात में बाधते ही भाई की दृष्टि में परिवर्तन हो जाता है। राखी बांधने वाली विकृत दृष्टि से नहीं देखती। इतना ही नहीं बल्कि उसके रक्षण का उत्तरदायित्व स्वयं लेती है। जिससे बहन समाज में निर्भय होकर फिर सकती है। आज बहन निर्भय नहीं है। समाज में निडर होकर घूम नहीं सकती है। उसका उपहास करके पशुतुल्य वृत्तिवालों को समझाकर या विशेष प्रकार की शिक्षादेकर सुधारने की जरुरत है। उन लोगों को खबर नहीं कि जिस समाज में बहन निडर नहीं है वह अपने स्वत्व को या अपने स्थान को खो देता है। कोई समाज में अस्तित्व नहीं रह जाता।

विश्व में स्त्री पुरुष का संबन्धअनादिकाल से रहा है और अंत तक रहेगा। पति-पत्नी, मां-बेटा, भाई-बहन का संबन्धही निरपेक्ष्य है। अन्य सभी संबन्धसापेक्ष्य है। प्रत्येक संस्कृति ने भाई बहन के पवित्र संबन्धको मान्यता दी है। बहन के जातीय संबन्धको वर्ज्य बताया है। पशु-पक्षी में ऐसा बन्धन नहीं होता। विज्ञान की दृष्टि से भाई-बहन विभिन्न लिङ्गी (Opposite Sex) पुरुष तथा स्त्री ही है। परंतु उसमें पवित्रता की सुगंधडालने का काम धर्म या संस्कृति ने किया है। भारतीय संस्कृतिने तो इससे भी अधिक आगे है जो अपनी पत्नी के सिवाय जगत की स्त्री मात्र को मां या तो बहन के समान माना है। इनके साथ जातीय संबन्धपाप है। स्त्री को केवल भोग का साधन या खिलौनां समझने वाले पाश्चात्य के लोग यह कैसे समझ सकते है कि भारतीय संस्कृति में पत्नी को सतत भोग की दृष्टि से नहीं देखा जाता है। अन्य दृष्टि भी रखने का आदेश किया जाता है।

कार्येषु मंत्री करणेषु दासी, भोज्येषु माता शयनेषु रंभा।
धर्मानुकुला क्षमया धरित्री षाड्गुण्यमेतद्धि पवित्रतानाम् ॥

महत्व कार्य में स्त्री को सलाहकार मानना, भोजन के समय स्वपत्नी में मातृभाव कहने वाली भारतीय संस्कृति का दृष्टिकोण कितना भव्य एवं उदात्त है।

भाई को राखी बांधने से पहले बहन मस्तक पर तिलक करती है। यहाँ मात्र भाई के मस्तक की पूजा नहीं बल्कि विचारों तथा बुद्धि के विश्वास का दर्शन है। बहन के इस तिलक मे महान आदर्श एवं एक उन्नत भावना छिपी हुई है। सामान्य दृष्टि से जगत को देखने वाली दो आंखो के अलांवा तीसरी एक पवित्र आंख तिलक के माध्यम से बहन भाई को त्रिलोचन बना देती है। भगवान शंकर तीसरा नेत्र खोलकर कामदेव को भस्म कर डाले थे। बहन भी भाई के तीसरे नेत्र रुपी बुद्धि को खोलकर उसके भीतर की विकार वासना को भस्म करने की सूचना दी है।

बहन की आँखे भाई के ऊपर निरंतर प्रेम की वर्षा करती रहती हैं। उसकी वाणी दिल में स्थित कामना के अंधकार को निकालकर भाई को कर्तव्य के मार्ग पर चलने को प्रेरित करती है।

"अमी जे भर्या तुज हृदय में, अन्यत्र दुर्लभ दिसता।
स्नेहाण तुज वचनो वडे, अंधार विणना उलचता ॥"

रक्षाबंधन के दिन प्रत्येक बहन आनंदित होती है। भाई के हाथ में राखी बांधना अपने जीवन की सार्थकता समझती है। रक्षा

अनुसंधान पृष्ठ - १९ पर...

समझदार को उपदेश

- साधु घनश्यामप्रकाशदास - जमीयतपुरा (महंत स्वामी माणसा)

एरपोर्ट पर कोलाहल सुनाई दिया । जाकर देखा तो जंबोजेट एरोप्लेन हरतरीके से उड़ान भरने के लिये तैयार था। सातसौ पैसेन्जरो से सुसज्ज यह जहाज, जिसमें तैलीय पदार्थ तथा अन्य सामग्री पूर्ण कर दीगई थी, कुछ अवशेष नहीं था। मात्र उड़ान भरने की देर थी। सिग्नल भी मिल गया था। तो उड़ान भरने में विलम्ब क्यों हो रहा था। जिस जहाज को सात समुद्रपार करके गन्तव्य स्थान पर पहुंचना था, उस जहाज का चालक (पाइलाट) ही उपस्थित नहीं था। उसका असीस्टन्ट था लेकिन मन स्थिर न होने के कारण परमीशन नहीं मिला। परिणाम स्वरुप पासपोर्ट-बीजा तथा टिकट सबकुछ क्लीयर होते हुए भी इसके साथ पैसेन्जर, सेवक-सेविकायें भी तैयार खड़ी थी तो भी पायलाट के अभाव में करोड़ो अथवा अरबोंपति चुपचाप बैठे रहे.... हालत हम सभी की कुछ ऐसी ही है। चौरासी लाख योनि पार करके मनुष्यरुपी एरपोर्ट पर आ पहुँचे हैं। अब मोक्षरुपी मंजिल को पार करने के लिये तत्पर बैठ गये हैं भक्ति के पाथेय के साथ ज्ञान-वैराग्य का सामान भी बांधलिये हैं । संत-हरिभक्त रुपी सहयात्रियों से सत्संग रुपी जंबोजेट प्लेन खचाखच भर गया है, फिर भी एक अफसोस की बात तो यह है कि एकमात्र सच्चे गुरु की पहचान के अभाव में अक्षरधाम के दिव्य सुख को भोगने के लिये प्रयाण होना सम्भव नहीं है। सत्संग के नाम होने वाले कोलाहल से स्तब्धहोजाना पड़ता है। मुक्तानंद स्वामी ने लिखा है -

"सद्गुरु साचा रे, सेवो शुद्ध भावशुं रे,
जेथी टले मनना विविधविकार
जेने संगे बाधे रे, प्रभु संगे प्रीतडी रे,
टली जाय जात वर्ण अंहकार.... सद्गुरु साचा रे ।"

अमेरिका के प्रथम प्रेसीडेन्ट अब्राहम लींकन ने कहा था कि - जिंदगी में एक भी सच्चा मित्र न मिलने का अफसोस रह गया। सच्चा मित्र खोजने पर भी नहीं मिलता है। बहुत ही दुर्लभ है -

"लाख में लाधे नहीं ने करोड़ में कोक।
जाकुं देखी घाती ठरे, एवा सो लाख में एक ॥
बाकर बच्चा लाख, लाखे विचारा,
पण ओलुं सिंहण बच्चु एक, एके हजारा,
सोलह करना शशी उगही, तारा गण समुदाई,
सबगिरी दाह लगई ए पण एक रवि विन रात न जाय...

इस तरह अपनी अलमस्ती में डूबा हुआ सच्चा गुरु अति दुर्लभ है। जिसके मिलने मात्र से मन-बुद्धि के सभी विकार नष्ट हो जाते हैं। आज के डॉक्टर क्लोराफोम की दवा से दिमाग की स्नायु को शिथिल करके मूर्छित अवश्य कर देते है। लेकिन मन के विकार को दूर करके आत्मतत्व का ज्ञान करने वाला अंतिम लक्ष्य सद्गुरु के विना कैसे सम्भव है ? इसके अलांवा अंतर में नाना विधमिथ्या-ममत्व की धारा वह रही है। इसे रोक कर प्रभु के चरण में प्रीति का अटूट बंधन बांधने की अपार दया सद्गुरु विना कौन कर सकता है ? अरे, जिसके सांनिध्य में जाति-वर्ण, ऊंच-नीच के भेद नहीं है मात्र आत्मबल ही मिलता है ऐसे सद्गुरु के ऊपर स्वयं मुक्तानंद स्वामी भी बलिहारी हो जाते है। न्यौछावर हो जाते है। ऐसे सद्गुरु के ऊपर सौ-सौ जन्म कुरबान हो जाय।

"वर्तमान पांच रे, पथावे दृढ करी छे,
संभड़ावे हरिना चरित्र, परम उदार,
एवा गुरु देव रे, गोविंद सम जानिये रे,
जेने संगे पामिये, भवजल पार .... सद्गुरु साचा रे"

आज के भ्रष्ट समाज में जहाँ चोरी-बेइमानी, भ्रष्टाचार से रक्षा करके अमृतदान करने वाले संत की महिमा स्वयं प्रभु स्वामिनारायण भगवानने अपने श्रीमुख के वचनामृत ग.प्र. ३७ में कहते हैं कि ऐसे संत की चरण रज हम अपने मस्तक पर चढाते हैं। उनके दर्शन की चाहना हम भी करते हैं। सारंगपुर १० में लिखते हैं कि "संत का दर्शन हुआ तो ऐसा समझना चाहिये कि साक्षात् भगवान का दर्शन हो गया।" ग.अं. के २६ वें वचनामृत में ऐसा लिखा है कि "संत की सेवा भगवान की तरह करनी चाहिये।" इसके आगे स्वामी कहते हैं कि -

"गुरु बिन ज्ञान रे, न पामे मन मुखी रे,
कहे छे एम महामुनी नी वेद पुराण
एवुं ते विचारी रे, सद्गुरु सेवजो रे,
जेथी हरि पामिये, प्रगट प्रमाण... सद्गुरु साचा रे"

मन के वशीभूत होकर रातदिन काम करके संसार में फंसे रहने वाले, हजारो वर्ष की तपश्चर्या को पलभर में पानी में फेर देने वालो का वेद-पुराणों में अनेकों उदाहरण है। इसलिये शुद्ध

अनुसंधान पृष्ठ - १९ पर...

भक्ति की सर्वोपरिता

- स्वामी व्रजभूषणदास गुरु स्वामी श्यामसुंदरदासजी (मूली)

सभी मोक्ष के साधन में भक्ति को मुख्य माना गया है। भागवत के माहात्म्य के पहले अध्याय में नारदजी कहते हैं कि जिसके हृदय में भक्ति निवास करती है ऐसे भक्त को स्वप्न में भी यमराज नहीं दिखाई देते। तो जगत की क्या बात करना ? ऐसे भक्त को भूत भी स्पर्श करते डरते हैं। भगवान तप, वेदाध्ययन, ज्ञान तथा कर्म इत्यादि साधनो से वश में नहीं होते, परंतु भक्ति से वश में होते हैं।

सकल भुवन मध्ये निर्धनास्तेऽपिधन्याः
निवसति हृदि येषां श्रीहरेर्भक्तिरेका।
हरिरपि निजलोकं सर्वथातो विहाय
प्रवशति हृदि तेषां भक्ति सूत्रोपनद्ध ॥

अर्थ : जिसके हृदय में भगवान की भक्ति निवास करती है वे निर्धन होते हुए भी धनवान हैं। उन्हें धन्यवाद है। कारण यह कि उनकी भक्तिरुपी डोरी से बंधकर स्वंय भगवान अपने धाम को छोड़कर भक्तों के हृदय में आकर निवास करते हैं।

एक समय सूरत में विशाल सभा का आयोजन किया गया। जिस सभा के उच्च आसन पर भगवान स्वामिनारायण को आसीन किया गया था। श्रीजी महाराज उस आसन पर विराजमान होकर कहने लगे कि हे भक्तजन ! आपलोगों में से किसी भी प्रकार का कोई भी प्रश्न पूछ सकता है। बाद में बुद्धिमान भालचन्द्र शेठने पूछा, हे महाराज ! भगवान की भक्ति मनुष्यों के बन्धन को काटने वाली है, इसी सन्दर्भ में मैं आपसे प्रश्न पूछता हूँ। वह भक्ति कितने प्रकार की है ? पृथ्वी पर उस भक्ति को दृढता से करने वाले कैसे होते हैं ? तथा भक्तों में भगवान की किस प्रकार की प्रीति हो, ये सब आप हमें कहें ?

भालचंद्र के प्रश्न सुनकर श्रीहरि उत्तर देते हैं। हे वैश्यवर्य? आपके प्रश्नों का उत्तर परमात्मा की कृपा के विना विद्वान भी नहीं दे सकते। लेकिन हम आपको, बताते हैं। इस लोक में मनुष्य प्रथम भक्ति तथा धर्म से युक्त गुरु से भागवती दीक्षा प्राप्त करके उनके बताये गये सेवा के मार्ग में आलस्य से रहित होकर भगवान की भक्ति करे और भगवान में प्रेम सहित अखंड वृत्ति हो उसे भक्ति कहते हैं ? भगवान की कथा का श्रवण, कीर्तन, स्मरण, चरण की सेवा, पूजन, नमस्कार, दासत्व, भगवान के साथ सखाभाव तथा आत्मनिवेदन (मैं आपका हूँ) ये भक्ति के नव प्रकार हैं। इन नव प्रकार की भक्ति से भगवान की भजन करनी चाहिये। इस सकाम भक्ति से भक्त इच्छित फल प्राप्त करता है। तथा निष्काम भक्त मुक्ति को प्राप्त करता है। प्रत्येकक्षण जिसने परमात्मा में मन लगाया है, एक क्षण भी जिसका चिंतन विना नहीं वीतता ऐसे निष्कामी संत भगवान की मूर्ति को प्रत्यक्ष देखते रहते हैं। उन्हीं के साथ बात भी करते रहते हैं। निष्काम भक्त ब्रह्मादि लोक की सम्पत्ति प्राप्त होने पर भी अणिमादिक अष्ट सिद्धियों की भी चाहना नहीं करते। इतना ही नहीं भगवान से बालात् आलोक्यादि मुक्तियों की भी चाहना नहीं करते। फिर भी भगवान ऐसे भक्तों को देवताओं को अति दुर्लभ अति श्रेष्ठ अपने धाम में लेजाते हैं।

निष्काम भक्त भगवान को जितना प्रिय है उतना लक्ष्मीजी भी नहीं प्रिय है। राधिका, ब्रह्मा तथा अपनी शरीर भी उतनी प्रिय नहीं है। परमात्मा में अतिशय गाढ प्रेम हो तो नव प्रकार की भक्ति से भी उत्तम है। भक्ति से भजन करने वाले जबतक उनके मन में दृढता नहीं आवे तब तक भक्ति अंकुर अवस्था में रहती है। इस तरह विवेकी भक्त को समझना चाहिये।

हे भालचंद्र भक्त ! भगवान में अखंड प्रीतिपरायण साधुजन के समागम से भक्ति की दृढता निरंतर करनी चाहिये। भक्ति करने में प्रेमवाला हो लेकिन भक्ति में दृढता न हुई हो तो ऐसे भगवान के भक्त कभी कुसंग के कारण भक्ति से गिरजाते हैं। फिर भी भक्ति व्यर्थ नहीं जाती। वही भक्ति दूसरे जन्म में भी उस भक्त को प्राप्त करती है। इसलिये विवेकी भक्त को चाहिये कि सत्पुरुषो के वचन में विश्वास रखकर प्रभु में प्रीति करें। भक्तों को चाहिये कि वे अपने से बड़े भक्तों को नमस्कार करें। गरीब भक्तों को अपने माता पिता जैसा सुखकारक वचन

बोलें । गुणों के समान साधुओं से भाई के समान स्नेह रखना चाहिये । कोई स्त्री लंपट वाला हो, पाखंडी हो, व्यसनी, क्रोधी, लोभी, खल तथा पाखंडी हो तो उसका संग न करे । जो भक्त श्रीहरि की इच्छा से कोई व्रत, तप, नियम या धर्म का पालन करते है वह व्रत भक्ति में वृद्धि करने वाला है । चौराशी लाखयोनि में भ्रमण करने के बाद मनुष्य शरीर प्राप्त करके बुद्धिमान पुरुष को चाहिये कि विषयों से निवृत्त होकर परमात्मा में स्नेह रखे ।

भगवान में जिसे स्नेह हो वे भक्त भगवान के चरित्र को जब सुनाते हों या कहते हों, उस समय हृदय में आनंद की अनुभूति होती है तथा नेत्रों से आनंद का प्रवाह नेत्रों द्वारा प्रवाहित होता है । अर्थात् प्रेमी भक्त भगवान के चरित्र कहते अथवा सुनते आनंद में रोने लगते हैं।

हे भालचंद्र ! इस तरह जिन भक्तों को भगवान के साथ प्रेम सहित भक्ति हो ऐसे भक्तों के साथ भगवान का गाढ प्रेम होता है । ऐसे भक्तों के संपूर्ण मनोरथ भगवान पूर्ण करते हैं । प्रभु में प्रेम करने के लिये देवपना, साधुपना, नियम, व्रत, दान तथा शास्त्रों का ज्ञान काम में नहीं आता है । परंतु भक्ति आती है । निर्मल भक्ति से अर्पण किया गया फल, फूल, पान, अक्षत इत्यादि भगवान स्वीकार करते हैं । किन्तु भक्ति विना अनेक प्रकार के मिष्ठान्न को स्वीकार नहीं करते ।

इस जन्म में अथवा अनेक योनियों में घूमने के बाद भी भगवान के धाम की प्राप्ति भक्ति के विना होती नहीं हैं । जो पुरुष स्त्रियों के कटाक्षरुपी बाण से पराजित नहीं हुए हैं तथा क्रोधरुपी रात्रि में भी जागते रहते हैं, उन पुरुषों को प्रभु में प्रीति होती हैं।

बालक, स्त्री, दर्पण, सगे-संबंधी, राग, धन, मादक वस्तु तथा होली के दिन का खेल इन आठ तत्वो में भक्तों का मन नहीं जाता है । बल्कि भगवान में ही प्रीति बनी रहती है । ऐसे भक्तों के चरण रज की चाहना देवता लोग भी करते रहते हैं । ऐसे साधुजन को ही गुरु कहना चाहिये, उन्हीं की पूजा करनी चाहिये जो पुरुष ऐसे संतो को छोड़कर दूसरे को गुरु बनाते हैं तथा पूजते हैं तो उनमें तथा पशुओं में कोई अन्तर नहीं है।

श्रीजी महाराज की ऐसी परावाणी सुनकर शेठ भालचंद्र खूब आनंदित हुए । बाद में उन्होंने मुक्तानंदादिक संतो का पूजन किया । इस प्रकार एकांतिक ज्ञानमय, धर्ममय प्रश्नोत्तर से सभी आनंदित हुए तथा श्रीहरि सूरत में कथा-प्रवचन द्वारा ज्ञान देते हुए सात दिन तक रुके रहे।

भक्ति को श्रेष्ठ मानकर तथा मोक्ष का मुख्य साधन मानकर अन्य साधनों को सहायक माना है । परमात्मा को साकार मानने वाले सभी संप्रदायावलम्बियों ने भक्ति को श्रेष्ठमाना है । अक्षराधिपति भगवान श्री स्वामिनारायण के हृदयगत अभिप्राय को देखें तो यही स्पष्ट होगा कि भक्ति ही प्रभु में प्रेम करने वाली हैं तथा मोक्ष को दिलाने वाली है।

''भगवान को भूलना नहीं''

भाई ! सुख मां के दुःख मां
भगवान ने भूलशो नहीं....
लखचौराशी ना फेरा पछी आ,
मानवदेह देनार ने,
तूं भूलतो नहीं भगवान ने....
मानवदेह धर्यो छे, अवतारी ने आराधवा,
मोहमाया मां अटवाई ने
तूं भूलतो नहीं भगवान ने.....
चोर्याशी ना फेरा पछी, मोक्ष मेडववा तूं,
भाई ! भजी ले भगवान ने,
तूं भूलतो नहीं भगवानने .....
हूं पद ना हुंकार, बहु कीधा,
हरि नाम ते कदी ना लीधा,
माटे भगवान ने भूलतोनहीं.....
अही नुं अहीं रहे जसे तारुं नाणुं,
जाणीश नहीं, क्यारे आवे जवानुं टाणुं,
माटे भगवानने भूलतो नहीं...
कावा-दावा खूब कर्या, संपत्ति काजे,
हवे आवी ऊभुं छे, यमनुं तेडुं आजे,
मारे ''नरनारायण'' भूलतो नहीं.....

प्रो. महादेव धोरियाणी - राजकोट

गुरु पूर्णिमा के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का शुभाशीर्वाद

हम बड़े भाग्यशाली है। इस मंदिर में दर्शन करने का तथा इस सभा मंडप में बैठने को जिसकी बड़ी भाग्य होगी वही बैठ सकता है। कारण यहकि सब प्राप्त है, परंतु यह अत्यंत दुर्लभ है। जगत में कहीं भक्ति है तो धर्म नहीं। कही धर्म हैं तो भक्ति नहीं। कहीं तो ज्ञान की बड़ी-बड़ी बाते होती है, तो कहीं केवल वैराग्य की प्रधानता दिखाई देती है। हमें श्रीजी महाराज ने ज्ञान, वैराग्य, भक्ति एवं बुद्धि सभी समान दिया है। हम भाग्यशाली इसलिये हैं कि मात्र बुद्धि या मेहनत से नहीं बल्कि महाराजने रामानंद स्वामी से हमलोगों को सुखी होने के लिये दो वरदान मांगा था। इसलिये हम महाराज की कृपा से सुखी है। भगवान के जितना नजदीक रहाजाय, जितनी आज्ञाओं का पालन हो सके उतना ही जीवन में सुख रहेगा। बहुत स्पष्ट बात है। बहुत पैसों से सुख नहीं मिलता, बड़े पद को प्राप्त करने से भी सुख नहीं मिलता। सुख मात्र भगवान की आज्ञा में या शरणागति में है। चाहे जितना बड़ा कोई हो, महान सिद्धि को क्यों न प्राप्त कर लिया हो तो भी उसका ध्यान नहीं हो सकता, ध्यान मात्र भगवान का ही किया जा सकता है।

हम जो प्रतिदिन आरती बोलते है, उसकी पंक्ति याद रखने लायक है। "काल करम थी छूटी, कुटुम्ब सहित तरसे"। कर्म या फल प्रत्येक व्यक्ति को भोगना ही पड़ता है।" नाभुक्तं क्षीयते कर्म जन्म कोटि शतैरयि" ऐसा कहा गया है। परंतु हमें जो भगवान मिले है वे काल तथा कर्म पर रेखा चिन्ह खींच सकते हैं। काल-कर्म तथा प्रारब्धसबकुछ महाराज के आधीन है। महाराज इन से ऊपर हैं। इसलिये उनकी शरणागति करने से प्रारब्धको फेर सकते हैं। हमें मात्र महाराज की आज्ञा में रहने की जरुरत है। महाराज की आंख परखने आना चाहिये। हम कहते हैं कि कोई यदि सत्संगी के मटके का पानी भी पीले तो उसका कल्याण होजाता है। ऐसा कब हो सकता है ? जब हमें महाराज मिले हैं ऐसी भावना हो तब। अपने घर एक मंदिर होना चाहिये। इसलिये अपनी क्रियायें उत्तम होनी चाहिये। बेटा-बेटी को यदि संस्कार नहीं देगे तो दीपक तले अंधेरा जैसी बात होगी। इससे आगे चलकर आपको भी दुःख होगा। मंदिर के दरवाजे पर प्रवेश करें तो सतयुग जैसे लगता है। कारण यह कि यहाँ महाराज ने कलियुग को प्रवेश होने ही नहीं दिया। बाद में जब मंदिर से बाहर निकले तो चारो तरफ कलियुग का प्रभाव दिखाई देगा।

महाराज आप सभी को आज्ञा पालन की खूब शक्ति दे, आप सभी को सुखी करें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

संकलन - गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद द्वारा कीर्तन की सीडी तथा भक्तचिंतामणी ग्रन्थ का प्रकाशन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा एवं आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से अपने अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा "तमे मीठुं बोलो ने" इस शीर्षक से बाल कलाकार श्री रिंकल पटेल के मधुर स्वर में गया हुआ नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन की सीडी तैयार की गई है। जिसमें विशेष रुप से प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद का दिव्य लाभ समाया हुआ है। श्री कांतिभाई पटेल (भगवानपुरावाला वर्तमान साउथ कोरिया) ने इसकी सेवा की है। इसी तरह स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत भक्त चिंतामणी ग्रन्थ का पुनः प्रकाशन किया गया है। इस पुस्तक प्रकाशन में श्री अशोकभाई पटेल (मांडवी-कच्छ वर्तमान मे लंदन) परिवार ने सेवा कार्य किया है। उपरोक्त साहित्य अपने साहित्य केन्द्र श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर से प्राप्त होंगे।

अक्षरधाम की पगडंडी अर्थात् श्री स्वामिनारायण म्युझियम

- जयंतीभाई के सोनी (मेमनगर-अहमदाबाद)

अपने पितरों का कल्याण करने केलिये भगीरथ ऋषि ने कठिन तप किया, परिणाम स्वरुप गंगाजी को स्वर्ग में से पृथ्वी पर आना पड़ा। गंगाजी के माध्यम से आज तक तथा आनेवाले युग तक जीवों के पाप धोने के लिये परोपकार किया है । इसी तरह श्री स्वामिनारायण सप्रदाय के विकाश को ध्यान में रखकर स्वप्न द्रष्टा तथा संकल्प शिल्पी अपने प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का दिव्य संकल्प संप्रदाय के इतिहास में सर्वप्रथम अहमदाबाद नारायणपुरा में भव्य-दिव्य श्री स्वामिनारायण म्युझियम का निर्माण हो रहा है। अहो ! कैसा अद्‌भुत विचार अपने बड़े महाराज के हृदय में प्रगट हुआ होगा कि स्वामिनारायण भगवान के अंगभूत प्रसादीकी जो वस्तुयें अमूल्य हैं तथा अनेक सत्संगियों के घर में अस्त-व्यस्त पड़ी थी, उनका योग्य रख रखाव आज के दौड़ धूप वाले समय में संभव नहीं था, इसलिये सभी प्रसादी की वस्तुयें एक जगह पर वैज्ञानिक ढंग से युगोपर्यंत जैसी हैं वैसी बनी रहें तथा उनका दर्शन अनेक मुमुक्षुओं को सरलता से होता रहे जिससे उनके मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो, इस हेतु से श्री स्वामिनारायण म्युझियम का निर्माण हो रहा है।

गढड़ा प्रथम के ६३ वें वचनामृत में श्रीजी महाराजने कहा है कि "यथार्थ निश्चय कोने कहेवाय अने तेनां शा लक्षण होय । जिसमें श्रीजी महाराज कहते हैं कि "भगवान का खान-पान, वस्त्रालंकार इत्यादि को निर्गुण तथा कल्याणकारी माने उसे ही भगवान का निश्चय हुआ है ऐसा समझना चाहिये । उसी में कल्याणकारी गुण आते हैं। कोई भी वस्तु यदि भगवान के संबन्धकी है तो वह भगवान के समान होजाती है। तथा इसके दर्शनमात्र से महानफळ की प्राप्ति होती है। जगत में एक सर्व सामान्य सिद्धांत है कि जिसके साथ जैसा संबन्धहोता है, उसका गुण उसमें आता है। इसी तरह यहाँ भी परब्रह्म परमात्मा नारायण के सबन्धमें आये हुए सभी पदार्थ निर्गुण तथा कल्याणकारी है जिसके दर्शन मात्र से कल्याण की यथार्थता प्रगट होजाती है। एक सत्य घटना है कि अपने संप्रदाय से इतर भक्त को गढपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर जाने का अवसर मिला, उस भक्त को मंदिर का दरवाजा बहुत सुन्दर लगा, अब वह यहाँ वहाँ दरवाजे की ही प्रशंसा करता, कितना सुन्दर मंदिर का दरवाजा है । देहावसमान के समय उस श्री स्वामिनारायण मंदिर के दरवाजे की स्मृति आगई जिससे श्रीजी महाराज उसे अक्षरधाम में लेगये ।इस तरह के अनेकों उदाहरण हैं।

पंचाला में श्रीजी महाराज पंक्ति में सेवईं परोस रहे थे । जिसमें किसी अन्य दरिद्र को भी अपने हाथों से परोस कर खिलाये उसी समय से सेवईं की सदा याद करता हा, परिणाम स्वरुप प्राणांत के समय भी उसी सेवईं की याद के साथ परोसते हुए सुन्दर स्वरुप भगवान की भी याद आगई, जिससे श्रीजी महाराज उसे अक्षरधाम में लेगये। यह महाराज से संबन्धित प्रसादी की वस्तुओं का प्रताप है। परंतु सेवईं की याद छोड़कर जगत की वस्तुओं का ध्यान किया होता तो भूत-प्रेत की योनि में जाना होता । अरे ! भूत-प्रेत को या जिसे भूत-प्रेत पकड़ा हो उसे भगवान के प्रसादी का जल पिलाया जाय तो वह नहीं पीता । कारण यह कि भगवान के प्रसादी का जल पान करलेंगे तो इस व्यक्ति की शरीर को छोड़कर जाना पड़ेगा।

श्रीजी महाराज ने गढडा प्रथम प्रकरण के १८ वें वचनामृत में भी जगत की सगुण वस्तु तथा भगवान के संबन्धवाली निर्गुण वस्तु दोनो के बीच में क्या अंतर है। तो बताया कि -

"आप हमारे हैं इसलिये जानते हैं कि आप सबका मोक्ष तो होनेवाला ही है क्योंकि आप मेरे आज्ञांकित होकर जीवन व्यवहार करते हैं। लेकिन कोई कितना बड़ा शास्त्रज्ञ हो, विद्वान हो तो भी वह मुक्त नहीं होता। इस तरह कहकर श्रीजी महाराज ने जगत संबन्धी पंच विषय (शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गन्ध) जीव को भ्रष्ट करके कल्याण मार्ग से गिरा देता है। जबकि एही पांच विषय भगवान संबंधी निर्गुण पदार्थो के साथ जुड़ते हैं तो इस लोक में सुख तथा परलोक में मुक्ति मिलती है। श्रीजी महाराज के इस वचनामृत को चरितार्थ करने के लिये लाखों करोड़ो जीव का कल्याण हो इस हेतु से प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को भगवान स्वामिनारायणने श्री स्वामिनारायण म्युझियम की प्रेरणा की होगी। यहाँ मुमुक्षु जीवात्मा श्री स्वामिनारायण म्युझियम में आकर श्रीजी महाराज की अंगभूत प्रसादी की वस्तुओं का सरलता से दर्शन करके मनन-चिंतन-निदिध्यासन द्वारा अपने मोक्ष मार्ग को सरल कर सकेंगे।

इस समय जगत में परोपकार का कार्य नाम शेष भी नहीं रहा। ऐसे परिप्रेक्ष्य में अनंत जन्मों से भवाटवी में भटकते जीवात्मा को आत्यंतिक कल्याण के मार्गपर लेजाने के लिये शुभ हेतु से अपने बड़े

महाराज श्री म्युझियम का कार्यारम्भ किये हैं। इस म्युझियम के माध्यम से वर्तमान के जीवात्माओं का तथा युगोपर्यंत आने वाली पीढियों के जीवात्माओं का भी कल्याण हो सकेगा। एक आत्मा को भगवान के सन्मुख करने से ब्रह्माण्ड को उबारने का फल मिलता है। इसी न्याय से इस म्युझियम के माध्यम से असंख्य आत्माओं को भगवान के सन्मुख करने का शुभ आशय है। इस तरह श्री स्वामिनारायण म्युझियम मात्र हम सभी के जीवन के कल्याण के लिये है।

इस संप्रदाय के छोटे-बड़े प्रत्येक हरिभक्तों ने अपना योगदान करके धन्यता प्राप्त की है। अब म्युझियम करीब पूर्णता के किनारे पर है। इसलिये सभी भक्तजन को विचार करना चाहिये कि इस सेवा से वंचित न रह जांय। अपना शारीरिक-मानसिक-आर्थिक सभी प्रकार से यथा संभव दान जीवन में कल्याण कारक होगा। इसी में श्रीहरि की प्रसन्नता है। शरीर का कोई ठेकाना नहीं है। एक भाई की विवाह के समय गर्बा करते हुए मृत्यु हो गयी। हमारे पड़ोश में अच्छे हरिभक्त थे। दोपहर के १२ बजे तक स्वस्थ थे, एकाएक करीब १ बजे हार्ट एटेक हुआ कि अक्षरवासी हो गये। यही इस शरीर की क्षण भंगुरता हैं। इसीलिये शिक्षापत्री में श्रीजी महाराज ने आज्ञा की है कि "धर्म संबन्धी कार्य तत्काल करना चाहिये।" सेवा करने का संकल्प हो तो तुरंत करना चाहिये। क्योंकि शुभ संकल्प भी जन्म का कारक है। संप्रदाय में सभी को ख्याल है कि गढपुर में लाधा ठक्कर की माताजी श्रीजी महाराज को स्वयं रसोई बनाकर खिलाने का संकल्प की थी, वह संभव नहीं हुआ और शरीर छूट गई तो पुनः सत्संग में जन्म लेना पड़ा। जब अपने हाथों से श्रीहरि को भोजन कराई तो धाम की प्राप्ति हुई। नश्वर शरीर का कोई भरोसा नहीं है। इसलिये श्री स्वामिनारायण म्युझियम के सेवा की प्रेरणा अपने इष्टदेव तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की है। इस लेख को वांचकर प्रत्येक सत्संगी अपने कर्तव्य को समझकर सहयोग करें। यदि इस विषय का ज्ञान अन्य सत्संगी को न होतो उसे भी बतावें। इस प्रेरणा का भी बहुत बड़ा फल है। एक प्रसंग समझने लायक है - एक अच्छे हरिभक्त थे लेकिन उनकी परिस्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। परंतु इस सेवा कार्य को अपने इष्टदेव का कार्य समझकर यथायोग्य सेवा का संकल्प कर लिया। संयोगवश सेवा नहीं कर सके और स्वास्थ्य विगड़ गया। उन्हें यह चिंता होने लगी कि क्या अब मैं अपने संकल्प को पूरा नहीं करपाऊँगा। लेकिन भगवान तो प्रत्यक्ष द्रष्टा हैं। भक्त की आवाज सुनलिये, धीरे-धीरे भक्त का स्वास्थ्य सुधरने लगा। जब ठीक हो गये तो म्युजियम स्थल पर पहुँच कर अपने संकल्प के अनुसार भेंट लिखवाये। अपने जीवन की सार्थकता समझकर आनंद का अनुभव करने लगे। संयोगवश आठ दिन में महाराज अपने धाम में ले गये। श्रीजी महाराज को भी भक्त की सेवा म्युझियम के लिये स्वीकार करके धाम में लेजाना था। यह कार्य श्रीजी महाराज का था, इस प्रसंग से चरितार्थ होजाता है।

संसारिक घर में अनेकों प्रसंग आते रहते हैं। विवाह, वास्तुपूजन, मरण इत्यादि अनेक प्रसंग लाखों रुपये खर्च करके करना पड़ता है। इसमें कोई कल्याण नहीं है। फिर भी व्यवहार समझकर करना पड़ता है। इसलिये जीवात्मा के कल्याण हेतु महाराज की प्रसन्नता के लिए प्रथम स्थान देना चाहिये। श्री स्वामिनारायण म्युझियम का निर्माण कार्य मुमुक्षुआत्माओं को भगवान के समीप लेजाकर मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य सिद्ध करने के लिये बड़े महाराजश्री ने पुरुषार्थ किया है। इस कार्य में सहभागी होने के लिये म्युझियम का कार्य जल्दी हो इसके लिये प्रतिदिन श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना करनी चाहीये। सामूहिक प्रार्थना महाराज अवश्य सुनेंगे।

छपैया धाम बावनी

पहेली-पहेली पगली पाडी घनश्यामे रे,
अक्षरधाम थी, छपैयधामे पधारी रे,
पगली मां हे, सोले चिन्ह विराजे रे,
जेने कहे छे अक्षरातीत अविनाशी रे.....१

धर्मने भक्ति, थकी प्रगट्या घनश्याम रे,
छपैयामां बाल लीला, कीधी न्यारी रे,
कालीदत्तनो मोक्षकीधो आंबा वृक्षे रे,
ब्रह्माणी तो, भूल्या पड्या मीन सागरे रे.....२

पारणियुं तो, लाव्या कुबेर भंडारी रे,
वाघने चामड़े थी, वाद्य कीधो घनश्याम रे,
वानर सेना, पूंछले झाली भगाडी रे,
धन्य छपैया, भूमिना भाग्य शुं वरवाणुं रे.....३

खांपातलावडिये सेवा कीधी धनवंत्रीए,
विश्मय पाम्या, राम प्रतापजी त्रिखुण खेतरे रे,
दीक्षा जीवन धन्य, कल्याण सागरे रे,
भूतिया कवाना, भूत भाग्या बद्रिनाथ रे.....४

जाबुंडाए, मक्ष्नो हाथ उतारी रे,
अंगुठाथी, गंगा लाव्या गौघाटे रे,
नारायण सरोवर, पाया सखाने दूधरे,
पोक्ष पीपले चढी, निरख्या निज संत रे.....५

रक्षा करे, माणकीए विराजी घनश्याम रे,
सदा थाये, अन्तरे एवो अभ्यास रे,
नूतन आरस मंदिर जन्म स्थान रे,
प्रहलाद मागे, सेवा करी अक्षरधाम रे.....६

- प्रहलादभई वी. पटेल
करजीणवाळा (हाल-न्यूजर्सी)

सत्संग सुरभि

समझदार कौन ?

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

जीवाखाचर के भवन में रतो बसियो नामका राजबाई का एक संबंधी रहता था । वह अर्धपागल जैसे रहता था । उम्र अठ्ठारह वर्ष की थी । देखने में राजकुमार जैसे लगता था । श्रीहरि उसे भक्त बना लिये थे । सभी लोग उससे "जय स्वामिनारायण" बोलते लेकिन वह कुछ भी नहीं बोलता था । लेकिन श्रीहरि को अपलक दृष्टि से देखा करता था, जैसे अपने को हरि के साथ एकाकार कर रहा हो ।

श्रीहरि उसे अपना मित्र मानते थे । महाराज जब उसे देखते तो बहुत प्रसन्न होकर बोलते कि "मेरा मित्र अभी आकर मेरे पास बैठेगा" वह सुनते ही आकर चरण स्पर्श करके समीप में बैठ जाता । महाराज पूछते क्यों भोजन कर लिया ? चलो भूखे हो तो खिला दूँ । ऐसा कहकर महाराज कभी-कभी भोजन भी कराते थे । बड़े संतो से भी अधिक वह लाभ लिया । जब हरि भोजन करते हो वह आजाय तो बुलाकर भोजन कराते ।

श्रीहरि जब बाहर आते तो उसके कंधे पर हाथ रखकर आते, जैसे लगता कोई लंगोटिया यार हो । एक दिन जीवा खाचर के दरबार में श्रीहरि सभा में बिराजमान थे । उसी समय तो को आते देखकर खड़े हो गये उसके पास जाकर कंधे पर हाथ रखकर सिंहासन तक ले आये । साथ में बात भी करते रहे।

यह दृश्य सम्पूर्ण सभा देख रही थी । सभी को यह होता था कि अर्धपागल ऐसा रता बसिया में महाराजने क्या देख लिया है जो इसे देखते ही कहते हैं मेरा मित्र आगया हैं ?

सभा में बिराजमान सभी संत तथा हरिभक्तों के मन में ऐसा प्रश्न हुआ ।

महाराज रता को अपने पास बैठाये, बाद में सभा की तरफ दृष्टि किये और सभी की मुखाकृति को पढलिये । धीरे से महाराजने कहा ।

आज हम रता के कंधे पर हाथ रखकर बात करते हुए सभा में आये । आपलोगो के मन में इसी का कुतूहल है न ? लेकिन आज हम रता से पूछे कि मन में जो कुछ हो कहो हम तुम्हारे मित्र है, सब कुछ देंगे । आपको सुनकर आश्चर्य होगा, उसने क्या कहा ? सुनिये, आप तो भगवान है, आपसे अधिक कुछ भी नहीं है, आपसे अधिक जो होगा उसे मांग लेंगे । जब से आपकी शरण में आया हूँ तब से मेरी तृष्णा नष्ट हो गयी है । दुःख नष्ट हो गया । सभी सुख संपत्ति मिल गयी है । इसके अलावा क्या मांगना बाकी है, मांगे तो भिखारी कह लावें । महाराजने कहा अब आप सभी को ख्याल आगया होगा कि मेरा मित्र कैसा है । हमारे पास बड़े-बड़े संत आकर कहते हैं कि महाराज ! नीति-नियम पालना बड़ा कठिन है । कुछ ढीला कीजिये । गृहस्थ भी जगत की बिडम्बना लेकर आते हैं और कहते हैं कि हे महाराज इतनी दया कीजिये । जब कि इस रताभाई को हम हरदम कुछ मांगने की बात करते हैं, तब रता कहता है महाराज जब आप मिले हैं तो सबकुछ मिल गया है । जन्मजन्मांतर का सम्पूर्ण पुण्य का फल मिलगया । अब मांगने के लिये कुछ शेष रहता ही नहीं । आप लोग रता को पागल जैसा समझते हैं और अपमान करते रहते हैं लेकिन रता जैसा इस सभा में कोई नहीं है। अब आप ही बताइये समझदार कौन है ? आपलोग या यह मेरा मित्र ?

इतना कहकर महाराज शांत बैठ गये । समग्र सभा में सन्नाटा छा गया । इस अर्धपागल में इतनी समझ जो अभी अठ्ठारह वर्ष का है । वाह रता वाह ? महाराज के पास बैठा हुआ रता कुछ चिंतन कर रहा था । सभाजन उसके विषय में मनोमन मंथन कर रहे थे ।

अंत में महाराज बोले ऐसे सच्चे प्रेमी के ऊपर हमारा बहुत प्रेम होता है । सत्संग में जबतक प्रेम नहो तब तक नाम मात्र के लिये सत्संगी समझना चाहिये । परंतु जो हमें भगवान जानते है, उसमें मित्र जैसा व्यवहार हो जाता है । उसके बाद वह सच्चा सत्संगी होकर-समझदार सत्संगी कहाजायेगा । इतनी शिक्षा देकर महाराज खड़े हो गये । मंदिर में संध्या आरती का घंटनाद सुनाई दिया । यहनाद रोज की अपेक्षा आज कुछ मधुर लग रहा था । इसलिये कि महाराज की सच्ची परखलोगों को हुई थी ।

सत्संग भावपाठिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

भक्तवत्सल भगवान

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

पहले के जमाने में लोगो का नाम कचरा, डुंगर, उकरडा, धरमशी तथा डुंगरशी होता था लेकिन काम अद्‌भुत था। आजकल नाम तो अद्‌भुत होता है, वह नाम लिखकर न रखा जाय तो भूल जायेगा। पर नाम के अनुरुप काम नहीं रहा बल्कि कचड़ा हो गया है।

स्वामिनारायण भगवान अंजार में कचरा भगत के घर एकाकी पधारे। भक्त बहुत प्रसन्न हो गया। महाराज ! रामानंद स्वामी हमें आशीर्वाद देकर गये हैं। तुम शांति से अपने घर रहना। तुम्हे यात्रा करने की जरुरत नहीं है। सभीयात्रा तुम्हारे घर आजायेगी। आज वह वात चरितार्थ हो गई। सभी तीर्थ यहाँ आगये।

कचरा भक्त की स्थिति ठीक नहीं थी। वे गरीब थे। प्रारब्धमें सुख था लेकिन व्यवहार में थोड़ा विचार नहीं किये इस लिये दुःखी हुए। कईबार तो मनुष्य अपने किये से दुःखी होता है। व्यवहारिक कार्य करने के समय विचार करना चाहिये। एकदम व्याकुल नहीं हो जाना चाहिये। धीर-वीर होकर-विचार कर जिस में विश्वास हो ऐसे हितेच्छु से सलाह लेकर आगे गति करना चाहिये। व्यवहार के काम में दौड़ नहीं लगानी चाहिये।

कचरा भक्त के पास कुछ रुपये थे। जिस में पांच हजार रुपये थे जो आज के लिये पांच लाख से भी अधिक थे। किसीने कहा ये रुपये किसी को देदीजिये तो व्याज आयेगा। वह बढेगा। रखे रहने से क्यां फायदा। यह सुनकर कचरा भक्त किसी को सात सौ, किसी को पांच सौ, किसी को हजार, किसी को दो हजार इस तरह व्याज पर रुपये दे दिये। लेकिन संसार किसी नीति पर नहीं चलता। कचरा भक्त जिसे पैसे दिये थे उससे मांगने जाते तो सामने से कहते कि अगले महीने में देदेंगे। दीपावली में देदेंगे। अरे ! होली से पहले देदेंगे। इस तरह कहते लेकिन कोई देता नहीं था। व्याज भी नहीं देते थे जिससे काफी दुःखी हो गये। गरीब थे उनकी कौन सुनने वाला था ?

प्रभु आज घर पधारे। कचरा भक्त दूसरे के घर से शक्कर (मिस्त्री) मांगकर ले आये। महाराज के चरणों में भेंट कर दिये। भक्त को यह खबर नहीं थी कि महाराज समुद्र की खाड़ी पार करके आ रहे हैं। भूखे होंगे। क्या करें ? घर में कुछ नहीं था। श्रीजी महाराज मिस्त्री को हाथ में लेकर घुमा रहे थे। भक्त ! मिस्त्री तो ठीक आप इसकी भी भेंट कर सकते हैं। हमें आनंद हुआ। लेकिन हमे भूख लगी है। महाराज मैं संकोच में हूँ घर में घी, गुण पिशान (आंटा) कुछ भी नहीं है। महाराजने कहा पात्र आप बताइये ? चिंता मत कीजिये ? हंसते हुए हरि बोले।

श्रीजी महाराज स्वयं चुल्हा जलाकर रोटी बनाये। जो एकदम सादी रोटी थी जिसमें घी लगाया नहीं गया था। स्वयं बनाकर भोजन किये। लो भक्त ? आप भी भोजन करो। भक्त यह जानते नहीं थे कि प्रभु मेरे ऊपर कृपा करने आये हैं। प्रभु ने कहा, अब आपका घर घी - अन्नादि से भर जायेगा। इस तरह महाराज दो दिन तक भक्त के घर विश्राम किये। उनके घर में पलंग-बिस्तरा इत्यादि कुछ भी नहीं था। घर की ओसारी में जमीन पर बिछौना बिछाकर विराजमान हुए। भक्त अपने पडोशी को बुलाया। कुछ लोग आये। भगवान ने सभी को उपदेश दिया कि हमने कचरा भक्त को मिस्त्री का प्रसाद दिया है, जो लोग कचरा भक्त का व्याज पर पैसे लिये हैं वे वापस देकर मेरे प्रसाद को ग्रहण करेगे तो सुखी होंगे। इतना कहकर महाराज वहाँ से प्रस्थान किये।

कचरा भक्त जिसे-जिसे रुपये दिये थे उनके घर जाकर यह कहकर प्रसाद देने लगे कि आज मेरे घर भगवान स्वामिनारायण पधारे थे, यह भगवान का प्रसाद है इसे आप लोग ग्रहण करें। सभी ने प्रसाद लिया। प्रसाद ग्रहण करते ही सभी की बुद्धि निर्मल हो गई। सभी कहने लगे कि बिचारे कचरा भक्त को हमलोग व्यर्थ में परेशान करते हैं। व्याज के साथ एकभाई पैसा दे गया। इसी तरह दूसरे-तीसरे ने भी वापस दे दिया। सभी के पैसे व्याज के साथ वापस आगये। अब भक्त के पास खूब रुपये हो गये। भक्त को महाराज की वात याद आने लगी कि घी का पात्र तथा अन्न सभी कुछ दो दिन में भर जायेगा। भगवान की इच्छा से प्रभु की प्रेरणा से सभी रुपये आये, अब वे प्रवृत्ति करने लगे, और खूब सुखिया होगये।

श्रीजी महाराज जब कच्छ से वापस भुज गये, उस समय भुज जाकर भक्तने महाराज से कहा हे महाराज ? आप घर पधारिये। महाराजने मना किया कि एक बार जब आप के यहाँ आचुके हैं। पुनः आने पर भार बढेगा। फिर भी भक्तने कहा नहीं महाराज ? अब आप संतो के साथ पधारिये। महाराजने कहा संतो को पीने का पानी मिलेगा ? महाराज ! पानी की क्या बात अब घी भी मिलेगा। जब से आप का चरण मेरे घर पड़ा है तब से हमारा जीवन सुखी हो गया है। भगवान विचार करने लगे कि इसे हमने सुखी तो कर दिया है, यदि संत पधारें और सम्यक व्यवस्था न हुई तो संतों में उदासीनता होगी। ऐसा न हो इसलिये महाराजने संतो को बाहर-बाहर ही विदा करके स्वयं अकेले भक्त के घर पधारे और दो दिन तक रहे। भक्त के दारिद्रय को दूर करके पुनः भुज पधारे हैं।

मित्रो ! इसी तरह हम भी भगवान पर भरोसा रखेंगे तो सुखी होंगे। भगवान के सच्चे भक्त बनेंगे तो भगवान भक्तवत्सल बनेंगे। भगवान भक्तों के दुःख को देख नहीं सकते, उनके दुःख को दूर करके सुखी करते हैं।

●

भजन में भंग पड़ा

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

सभी की जिंदगी में प्रायः एक घटना तो घटी ही होती है। कब क्या होगा, जब हो जाता है तब ख्याल आता है। एक घटना है करसन काका की। वे सड़क के किनारे चादर विछाकर छोटी-मोटी समान बेचते थे। इसके साथ करसन काका को खूब भजन भी आती थी। काम करते जाते और भजन गाते जाते। "वैष्णवजन तो तेने रे कहिये जे पीर पराई जाने रे।" रे सगपण हरिवरनुं साचु, ऐसे सुन्दर भजन गाते रहते। दिन भर में करसन काका को आठ दश आना का काम मिलजाता था। उसी में जीवन का निर्वाह हो जाता था। लेकिन करसन काका जिस दुकान के सामने बैठकर काम करते और गीत गाते थे, उसी दुकान का मालिक करसन काका की भजन सुनता रहता था। उस भजन के सुनने से शेठ के सभी क्लेश दूर हो जाते थे। इसलिये वह शेठ करसन काका पर खूब प्रसन्न होकर पचास रुपये दे आया। यह कहकर कि आप की भजन से हमें बड़ी शांति मिलती है। मेरे दुःख धीरे-धीरे दूर होने लगे हैं। मैं सुखी होने लगा हूं। भगवान में विश्वास होने लगा है। भगवान ही सबकुछ करने वाले हैं। यह सब आपके भजन का प्रताप है। इसलिये आप ये पचास रुपये ले लीजिये। काका ने उन रुपयों को लेलिया। लेकिन काका उन रुपयों को सुबह शाम गिनने लगे। विचार करने लगे कि इन्हे अब कहाँ रखे, किसे रखने के लिये दे। उन रुपयों को साथ रखते तो रात में नीद नही आती थी। मुझे बहुत खर्च तो है नहीं ? इसको कहां रोकूं ? इन कई कारणो से भजन बोलना बन्द हो गया। केवल पैंसो की रक्षा का चिन्तन चलता रहता। रात में जागने के कारण दिन में आलस्य बना रहता। काम भी व्यवस्थित नहीं होता था। स्थिति ऐसी हुई कि करसन काका का सुखी जीवन पैंसों को लेकर दुःखी हो गया।

उन्होंने विचार किया कि ये पचास रुपये ही सभी दुःख के कारण है। इसलिये उन रुपयों को लेकर करसन काका शेठ के पास पहुँच गये। लो भाई ये आपके पचास रुपये, इन रुपयों को आप अपने व्यापार में लगायेगे तो आपकी बरकत होगी। लेकिन हमें ये पैसे नहीं चाहिये। रुपये देकर शांति का अनुभव करने लगे। अब शांति सेनींद आने लगी। पहले की तरह काम भी अच्छी तरह होता था और अच्छी तह भजन भी होती थी। आनंद में रहने लगे।

मित्रो ! आपको खबर पड़ गई होगी कि हमारी जिंदगी में भक्ति में विघ्नरुप क्या है ? यदि "हाँ" तो उसका त्याग कर देना या "नहीं" तो किसी संत की शरणागति लेकर उसे दूर करना। कारण यह कि.....

भक्तिभजन करने के बाद भी कितने लोगो को शांति नहीं मिलती, इसका कारण इस दृष्टांग में भरा पड़ा है। व्यवहार में रहकर कर्तव्य पालन करते हुए चिंतामुक्त रहना बड़ा कठिन काम है। बड़ा तप है। यथार्थ सिद्धि है।

मित्रों ! सुख कहाँ है ? रुपयों में है या समझ में जैसे-जैसे अधिक सम्पत्ति आवे वैसे-वैसे अशांति बढ़ती जावे। इसलिये अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान ने शिक्षापत्री में कहा हैं कि अपने अनुकुल उद्यम अवश्य करना चाहिये, उसमें से जो अपनी मेहनत की कमाई का प्राप्त हो, तो उसीसे सुख-शांति मिलती है।

भक्ति सुधा

कथा का माहात्म्य (दृष्टांत कथा)

- सांख्ययोगी कंचनबा (धांगध्रा)

एक राजा अपने शास्त्रीजी से प्रश्न पूछा कि शुक देवजी महाराज से कथा सुनकर राजा परीक्षित को सात दिन में ही मोक्ष हुआ, तो मैं साठ वर्ष से आप के पास कथा सुनता हूं, तो मेरा कल्याण होगा या नहीं ? मेरा जीव, मेरे कल्याण के लिये हंकारता नहीं है। इसलिये ऐसा लगता है, कि मैं झूठा हूँ या आप भागवत वांचने वाले, या स्वयं भागवतजी झूठे हैं। यह सुनकर ब्राह्मण देवता उत्तर नहीं दे सके। घर जाकर बेटे से कहे कि तूं शास्त्र पढा नहीं, राजा ने प्रश्न किया है उस उत्तर में तीनो में से किसी को झूठा नहीं कहा जासकता। यह सुनकर बेटे ने कहा कि यदि आप इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकें तो राजा से कह दीजियेगा कि इसका उत्तर मेरा बेटा देगा।

दूसरे दिन शास्त्रीजी भागवत की कथा करने गये। तो राजा ने पहले ही प्रश्न किया कि आप उत्तर दीजिये तब शास्त्रीजी ने कहा इसका उत्तर मेरा बेटा देगा। यह सुनकर बेटे को लेने के लिये राजाने गाडी भेंजी। वह वहाँ आया तो राजा ने पुनः वही प्रश्न किया। प्रश्न के उत्तर में शास्त्री के बेटेने कहा हे राजन् ! आप अपने राज्य को एक महीने हमें शासन करने के लिये दीजिये तो उत्तर दूँगा। यह सुनकर राजा लिखकर देदिये। शास्त्रीजी का पुत्र एक बगीचे में बैठने की उत्तम व्यवस्था के साथ फल-भूल भोजन अमृत जैसे पानी की भी व्यवस्था की थी। शास्त्रीजी का बेटा अपने साथ राजा को तथा अपने पिता को साथ लेकर घूमने गया। वहाँ नौकरों को आदेश दिया कि इन शास्त्रीजी को हाथ पीछे करके अशोक वृक्ष में बांधदो। साथ में राजा को भी।

आज्ञा के अनुसार नौकरों ने वैसा ही किया। काफी समय बीत गया तो राजाने कहा हमें भूख लगी है। शास्त्रीजी के बेटे ने कहा राजन् ! आप को जो भी खाना है खाओ अमृत जैसे जल पीओ। राजा ने कहा हाथ बंधे है यह कैसे संभव है। तब शास्त्रीजी के बेटे ने कहा इसमें क्या झूठा है - पक्वान्न झूठे हैं ? या आप झूठे हैं ? अथवा शास्त्रीजी झूठे हैं ? यह सुनकर राजाने कहा तीनो सत्य है।

ब्राह्मण बालकने कहा - भागवत सत्य है, शुक देवजी सत्य है, राजा परीक्षित भी सत्य है। इस में कारण यह कि - सात दिन तक शुकदेवजी महाराजने राजा परीक्षित को भागवत की कथा सुनाई, जिसे उन्होंने श्रवण, मनन तथा निरंतर अभ्यास करके जीवन में उतारे जिससे कल्याण हुआ। यह भी सत्य। परंतु मेरे पिताजी का मुझमें स्नेह करने से बंधे; आप राज्य के बंधन में बंधे हैं। मात्र भागवत ही सत्य है। परंतु आप भागवतजी का मनन, श्रवण तथा निरंतर अभ्यास नहीं किये, इसलिये आप का मन मोक्ष के लिये क्यों "हाँ" करे ?

सार यह कि जो माया से परे हैं उनसे यह भागवत कथा सुनी जाय तो ही माया से रहित होना संभव है। माया से रहित ही माया से छुड़ा सकता है।

•

श्रीजी महाराज का प्रकोष्ठ

- सोनी दक्षाबहन घनश्यामभाई (अहमदाबाद)

भारत भूमि अर्थात् संत, महापुरुष तथा अवतारों की भूमि। इस भूमि का सिंचन ऋषिमुनियोंने किया है। ऋषिमुनियों की परम्परा को चलाने के लिये इस धरती पर महामानव अवतरित होते हैं। जो भगवान की प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। इसी परिप्रेक्ष में स्वामिनारायण भगवान जैसे अनेकों दिव्य पुरुषो का हाथ पकड़कर आत्म समर्पण करके परमतत्व को प्राप्त किये है। भगवान स्वामिनारायण को शरणागति स्वीकार करने वाले तत्कालीन करीब ५०० जितने परमहंस परमतत्व को प्राप्त किये है। उन्हीं में एक प्रेमानंद स्वामी भी थे।

प्रेमानंद स्वामी एकशीघ्र कवि थे। स्वामिनारायण जो जो लीला करते उन-उन को अपने कीर्तन के रुप में व्यक्त करते थे। अक्षरशः वर्णन करने से उन्हें नारद की संज्ञा दी गई थी। इनका लालन-पालन मुसलमान परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम डोसा तथा माता का नाम नूरबाई था। परंतु पूर्व के संस्कार के कारण भक्ति परायण हो गये थे। वे भगवान के साथ रहने लगे थे। बाद में भगवान से दीक्षा ग्रहण कर लिये और भगवान की लीलाओं का गुणगान पद्य में करने लगे। उनका भगवान में सखा भाव था।

भगवान जब गढडा में दादा खाचर के दरबार में निवास कर रहे थे उस समय लाडुबा तथा जीवुबा दरबार के एक कक्ष में

महाराज के साथ सत्संग कर रही थी । ये दोनो वैराग्य मूर्ति के समान थी । सत्संग करने के लिये बहुत देर तक बैठी रही । समय का ख्याल नहीं रहा । दरबार में आने जाने वालों की भीड़ लगी रही । इसमें से किसी का ध्यान इस कक्ष की तरफ गया, उससे धीरे धीरे वात फैल गई की दोनो बहनें बहुत देर से महाराज के साथ एक प्रकोष्ठ में सत्संग कर रही हैं । यह बात अभय राजा तक पहुँच गई । अभयराजा बहुत क्रोधित हो गये । तत्काल म्यान में से तलवार निकाल कर गाँव में से दौड़ते हुए दरबार में पहुँच गये । वहाँ चिल्लाते हुए कहे निकल स्वामिनारायण बाहर । आजा तुम्हारे मस्तक को धड़ से अलग कर दूं । भगवान अन्तर्यामी थे । परिस्थिति जानकर बाहर आये और यह क्या ? तेज ही तेज चारो तरफ फैल रहा था । सभी की आँखे तेज के आगे बंद हो रही थी । कक्ष के सामने चतुर्भुज रुप दिखाई देने लगा । अभयराजा भगवान के चरण में गिर पड़े । उसी समय प्रेमानंद स्वामी बाहर खड़े के । महाराजने कहा स्वामी कीर्तन बोलिये । उसी समय कीर्तन बनाकर गाने लगे -

"आज मारे ओरड़े रे आव्या अविनाशी अलबेल,
बाने बोलाव्या रे, सुन्दर छोगावाला छेल ।"

इस तरह दो पद बोलकर बाद में अन्य को संबोधित करके दूसरे पद बोले ।

बोल्या श्रीहरि रे सांभणो नरनारी हरिजन ।
मारे एक वार्ता रे सहुने संभणाव्यानुं छे मन ॥

●

पक्षियों को समाधि

- तरलाबहन अतुलभाई पोथिवाला (अहमदाबाद)

छपैया के नजदीक तरगाँव में धर्मदेव का खेत था । एक दिन धर्म पिताने कहा "घनश्याम अपने खेत में धान की बाल पकगई है । पक्षी नुकशान कर रहे हैं । हमलोग बगल के गांव में जाने वाले है इसलिये आप जाकर खेत की रखवाली करना । घनश्यामने कहा अच्छा । भक्ति माताने भी घनश्याम महाराज को खिला पिलाकर तैयार करके हाथ में एक लकड़ी पकड़कर खेत के लिये रवाना करदीं ।

अनंत कोटि ब्रह्मांड के नाथ आज खेत की रखवाली करने जा रहे हैं । घनश्याम खेलते-खेलते थोड़े ही समय में खेत पहुँच गये । एक जामुन के वृक्ष पर चढकर देखे तो हजारो पक्षी उड़ रहे थे । खेत के चारो तरफ पक्षियों का बाहुल्य देखकर, उन्होंने विचार किया कि पक्षियों को मारा नहीं जा सकता । तो क्या करना चाहिये । तुरंत एक विचार आया और वे एक जोर की आवाज किये कि सारे पक्षी समाधिस्थ हो गये । परिणाम स्वरुप जहाँ थे वहीं फटाफट गिरने लगे । जैसे समाधिमें लीन हो गये हों ।

पक्षियों की समाधिहोने के बाद घनश्याम बगल में माधवराम शुक्ल के खेत में अपने मित्र रघुवीर तथा बकूस राम के साथ खेलने लगे । खेलते-खेलते साम हो गयी । धर्मदेव तथा रामप्रतापभाई खेत में घनश्याम महाराज को लेने आये । यहाँ घनश्याम नहीं मिले तो खोजते हुए बगल के खेत में गये वहाँ वे खेल रहे थे । खेलते देखकर धर्मपिता ने कहा, घनश्याम ? आपको मैंने खेत की रखवाली के लिये भेंजा था । आप तो यहाँ खेल रहे हैं । बाद में तीनों लोग साथ अपने खेत पर आये । भीतर जाकर देखे तो कितने पक्षी जमीन पर समाधिकी स्थिति में गिरे पड़े थे । कुछ वृक्ष पर स्थिर हो गये थे । धर्मदेव को आश्चर्य हुआ । धर्मदेव तथा रामप्रतापभाई तो विचार में पड़ गये । इतने पक्षी अपने खेत में मरे पड़े तो नहीं है । इतने में घनश्याम ने पुनः आवाज दी कि सभी सचेत होकर फरर से उड़ गये ।

धर्मपिता तथा बड़े भाई को एहसास हो गया कि छोटे घनश्याम तो सर्वोपरि भगवान है । निश्चित इन्हीं का यह काम है । सभी प्राण उन्हीं के हाथ में है । पिता की अंगुली पकड़कर घनश्याम बडे भाइ के साथ घर आये । गायें गोधूलिवेला में धूल उड़ाती घर की तरफ जा रही थी । घनश्याम के प्रिय पक्षी भी मधुर कलरव करते हुए अपने नीड की तरफ लौट रहे थे । कितना सुन्दर यह दृश्य रहा होगा ।

"सुंदर श्री घनश्याम मारा मन मंदिर मां आवो रे ।"

●

करोड़पति काशीराम शेठ

- गीताबहन लीलाधरभाई पित्रोडा (जोरावनगर)

एक बड़ा शहर था । उस शहर में करोड़पति काशीराम शेठ रहते थे । वे परमेश्वर की अपेक्षा पैसे में प्रेम करते थे । धर्म में तो लेशमात्र भी प्रेम नहीं था । एक समय इस गाँव में साधु-संत सत्संग करने आये । काशीराम शेठ सत्संग में जाते लेकिन अधिक बैठते नहीं थे । थोड़ा समय तक बैढकर चल देते थे ।

वसंत पंचमी के दिन मंदिर में संत कथा-कीर्तन करते और हरिभक्त प्रेम से कथा-कीर्तन सुनते । काशीराम शेठ भी कथा सुनते । शेठ पोथी पर पचीस-पचास पैसे चढाकर महाराज को वंदन करके चलने लगे, उसी समय संतो ने कहा, "शेठ ! दो घड़ी बैठो, हम आपके साथ कुछ बात करेंगे ।"

सभी हरिभक्तों के जाने के बाद स्वामीजीने काशीराम शेठ को बुलाकर कहा, काशीरम शेठ ! अब आपके अंतकाल का समय आ गया है । आपकी पांच दिन के बाद मृत्यु है । इसलिये सावधान होजाइये । स्वामीजी की बात सुनकर काशीराम शेठ उदास हो गये । मन में विचार करते है कि एक करोड़ रुपये एकत्रित करने में थोड़े ही पैसे बाकी हैं । उधर मौत की डर इधर कुछ पैसे और एकठ्ठा करने की लालसा । इन दोनों चिंताओ से आक्रांत शेठ को टट्टी-पेशाब हो गई । अब स्वामीजी तीसरे दिन

शेठ के घर सूई लेकर पधारे और काशीराम शेठ से कहने लगे। आप दो दिन बाद स्वर्गलोकजाने वाले हैं। वहाँ सब कुछ मिलेगा। लेकिन सूई वहाँ नहीं मिलती, इसलिये हमारे गुरुजी के लिए सूई लेते जाइये। यह सुनकर शेठ कहते हैं कि जब मैं मरजाऊँगा तो लोग मेरी शरीर को जला देंगे, फिर आपकी सूई मैं कैसे ले जाऊगा ?

संतने कहा, अरे शेठ ! जब आप एक छोटी सी सूई मेरे गुरुजी के लेजाने के लिये मना कर रहे हैं तो आप अपने एक करोड़ रुपये कैसे लेकर जायेंगे ? यदि आप करोड़ रुपये के साथ मेरे गुरुजी के लिये सूई लेते जांय तो एकपंथ दो काम होजायेगा। शेठजी का अंतकाल नजदीक आ गया और स्वामीजी का वचन याद करके पस्ताने लगे। बाद में तो शेठजी स्वामीजी के चरण में गिरकर कहने लगे कि आप कोई रास्ता बताइये। जिससे मेरे जीव की सद्गति हो और महाराज मुझे लेने आवें ?

संत ने मस्तक पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया कि जाइये काशीराम शेठ ? आपका कोई बाल बाका नही कर सकता। अब आप धर्म में चूकियेगा नहीं। इन रुपयों का उचित व्यवहार योग्य जगह कर लीजिये। ऐसा सुनते ही शेठजी ने एक भाग धर्मादा, एक भाग मंदिर के लिये किये, बाकी दो भाग घर व्यवहार के लिये रखे। इससे महाराज तथा संत प्रसन्न हो गये। काशीराम शेठ की मौत आयी तो महाराज स्वयं लेने आये। संत समागम से सुख मिलता है। ब्रह्मानंद स्वामीने लिखा है -

"संत समागम कीजे हो, निशदिन संत समागम कीजे।
मान तनी संतने के मुख से प्रेम सुधा रस पीजे ॥

पृष्ठ ४ का चालुं...

● कंसच्छेदन करके परमात्मा ने सांस्कृतिक परिवर्तन तथा कंस द्वारा एकहस्तक शासन करने वाले का बधकरने वाले श्रीकृष्णा ने समाज में जीने की रीति बताई है।

● सांदीपनि ऋषि के आश्रम में पढने वाले श्रीकृष्ण को आश्रम में जाकर पढने की क्या आवश्यकता ? लेकिन इस लीला चरित्र से परम्परा का पूजन तथा ऋषियों का गौरव बढाया है। राजकुमार भी संत के चरण में शिक्षा प्राप्त करें यह समझाया गया है।

● सभी के साथ आत्मीय भाव रखकर गुरु सेवा करना, जंगल में लकड़ी काटने जाने की लीला में गुरु की महिमा के साथ शिष्य के कर्तव्य को समझाया गया है। इसके साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को अपना काम स्वयं करना चाहिये, शर्म नहीं रखनी चाहिये यह समझाया गया है।

● सुदामा के साथ सखाभाव रखकर भगवान श्रीकृष्ण जिन्दगी भर उसे निभाया है, अवगणना नहीं किया। कृष्ण-सुदामा के मिलन समय के प्रसंग से यह स्पष्ट हो जाता है कि सहायक बनने की अपेक्षा सखा बनने में अधिक गौरव है। कारण यह कि भगवान श्रीकृष्ण प्रत्यक्ष सहयोग न करके परोक्ष में मार्गदर्शन द्वारा सुदामा के साथ रहे हैं।

● बांसुरी की संगीत से यह समझाये है कि मीठापन तथा माधुर्य बांसुरी में नहीं है बल्कि वांसुरी बजाने वाले में है। अपने जीवन रुपी बांसुरी में भी प्रभु संगीत निर्माण करे लेकिन हमारा जीवन निरहंकारी होना आवश्यक है। वांसुरी की तरह हमें भी भगवान की प्रसन्नता के लिये व्रत, तप, योग, यज्ञ, धर्म, नियम में लगजाना पडेगा। बांसुरी की अपनी स्वयं की कोई इच्छा नही होती। जैसे प्रभु बजावें वैसे ही वह बाजती है। इसी तरह हमे भी शरणागत के रुप में प्रभु स्वीकार करें ऐसी भावना होनी चाहिए। जैसे रखें वैसी मनोवृत्ति बनानी पडेगी।

रुक्मिणी के तुलसी दल से उत्तोलित हुए है। प्रभु भावना के भूखे हैं। "दुर्योधन घर मेवा त्यागी शाग विदुर घर खायो"। जो भगवान की प्रसन्नता के लिये भावना रखते है उनके छोटे-बडे सभी कार्य प्रभु किये हैं।

पांडवो के राजसूय यज्ञ में भगवान श्रीकृष्ण जूठा पत्तल उठाने का कार्य किये थे। अर्जुन के रथ का सारथी बनकर घोड़े को स्नान भी कराये थे। सच्ची भावना से हम भी प्रभु भजन में लगजांय तो प्रभु मदद के लिये अवश्य आयेंगे।

हम भी श्रीकृष्ण भगवान के जीवन का विचार करके उनके गुणों को जवीन में उतारें तथा उनकी सांस्कृतिक दृष्टि को समाज में प्रसरित करने में दृढ निश्चयी बनें तभी यथार्थ में जन्माष्टमी उत्सव मनाया गया समझना चाहिये।

इस प्रकार भगवान स्वामिनारायण ने भी वचनामृत में उत्सवों की खूब महिमा बताकर जन्माष्टमी इत्यादि जन्मोत्सवों को संतो के तथा हरिभक्तों के जीवन में ऐसा ओतप्रोत कर दिया है कि सदा के लिये कोई न कोई महोत्सव का आनंद सभी को मिलता रहता है।

इसलिये प्रिय भक्तजन जन्माष्टमी के उत्सव में दर्शन करने के लिये कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में अवश्य पधारना। जन्माष्टमी के उत्सव का सुख लेना हो तो मंदिर दर्शन करने अवश्य आना।

हमारे प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु:, गुरु देवो महेश्वर:।
गुरु: साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम: ॥

गुरु शब्द का अर्थ होता है अंधकार से प्रकाश की तरफ लेजाना । यद्यपि इस शब्दसे शिक्षक या मार्गदर्शक समझा जाता है । इससे मूल अर्थ खत्म होजाता है । शिक्षक या मार्ग दर्शक शब्द विद्यार्थी के साथ जुड़ा हुआ है । इसके अलांवा यह भी होता है कि जब कोई परीक्षा देते है, अभ्यास करते हैं, उस समय शिक्षक भी गुरु के रुप में कहा जाता है । लेकिन जो आध्यात्मिक तथा व्यक्तिगत ढंग से अपने शिष्य को मोक्ष के मार्ग पर लेजाता है वह यथार्थ गुरु होता है।

स्त्री भक्ताओं के लिये (एक स्त्रीकी) गुरु के रुप में व्यवस्था करने वाला एकमात्र मूल स्वामिनारायण संप्रदाय है। इसीलिये यह अद्वितीय है । भगवान श्री स्वामिनारायण ने प.पू.ध.धु. धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की धर्मपत्नी को स्त्री भक्ताओं के गुरु के स्थान पर स्थापित किया है । इसलिये उन्हे 'अ.सौ. लक्ष्मी स्वरुपा गादीवालाजी'' कहा जाता है । उन्हें सभी बहनें प्रेम से ''बा'' कहती हैं । यथार्थ रुपमें वे संप्रदाय की ''मां''हैं।

वे मंदिर में या स्वामिनारायण बाग में कभी भी बहनो से मिलकर सत्संग प्रवृत्ति के विकास तथा वृद्धि के लिये कान्फरन्स का आयोजन करने के लिये तथा अन्य अनेक विधकार्यभार के लिये सतत प्रेरणा देती रहती हैं । उन्हीं के मार्गदर्शन में एक सप्ताह तक अनेक विषयों पर चर्चा करके बहुत सारी युवतियां सुंदर अनुभव गम्य मार्गदर्शन का लाभ ली है । यह बात बहुत अच्छी है कि प.पू. गादीवालाजी एक पत्नी, एक माता तथा एक पुत्रवधु के रुप में भी उत्तरदायित्व सम्हालते हुए अन्य उत्तरदायित्व का ख्याल अपने निवास स्थान पर करती रहती है । इसके अलांवा देश-विदेश में किसी भी स्त्री भक्ता को कोई मार्गदर्शन चाहिये तो मार्गदर्शन के लिये तत्पर रहती है । इसका हमें प्रत्यक्ष अनुभव हुआ है । जब भी हमें दुनियां के प्रपंच की समस्या होती है तब पूज्या गादीवालाजी सलाह-प्रेरणा देकर संतुष्ट करती हैं । जो हमें श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रति सदा पतिव्रता भक्ति का संदेश भी देती रहती है।

पू. गादीवालाजी के प्रवचन में समस्त महिलाओं को गृहस्थाश्रम की मर्यादा का मार्गदर्शन के साथ धर्म में अभिरुची कैसे बढे इसकी भी सीख देती रहती हैं । विगतवर्ष हम गुजरात-राजस्थान के नाथद्वारा मंदिर में प.पू. गादीवालाजी के सानिध्य में तीन दिन तक साथ रहीं । तीन दिन का यह शिबिर था । आई हुई सभी महिलाओं के लिये प्रारम्भिक जीवन से लेकर आगे आने वाले समय तक का उपदेश मिला था । जिस में समय से भोजन करना, समय से सोना (शयन) तथा आरोग्य सम्बन्धित बहुत सारी बातें एक मां की तरह उपदेश दी थी । पूज्या गादीवालाजी सदा हसमुख रहती है । जब कोई महिला के दु:ख को सुनती हैं तो स्वयं दु:खी होजाती है । उसकी चिंता होजाती है । उसके दु:ख को जानकर निराकरण करने का प्रयत्न करती हैं । इस परिषद में एक बहन सदा रोये जा रही थी, इस कारण को जानने के लिये पू. गादीवालाजी दूसरी महिला से कहीं कि इस के साथ कुछ विषयान्तर की बात करो जिससे दु:ख से निकल सके । ऐसा ही हुआ । बाद में तो जब मन प्रसन्न होगया तो जब तक सभा चली तब तक कार्यक्रम में ध्यान लगा रहा । यही पूज्या गादीवालाजी की उदारता, स्नेह तथा प्रेम का परिणाम है, इसे व्यक्त नहीं किया जासकता है।

प.पू. गादीवालाजी बहनों को नित्य पूजा तथा मानसिक पूजा किस तरह की जाय यह सिखाती रहती हैं । इसमें आवश्यक मार्गदर्शन भी देती रहती हैं । जिससे पूजा करते-करते भगवान की मूर्ति का ध्यान बना रहे । वे एकादशी जैसे व्रत के समय में भक्तजनों के साथ आकर जागरण भी करती हैं। सभी के साथ कीर्तन भक्ति भी करती हैं । उनके दर्शन में लक्ष्मीजी के दर्शन का अनुभव होता है।

हमारा अनुभव तो ऐसा है कि यदि हम पूज्या गादीवालाजी की तरफ पग आगे बढायेंगे तो वे हमारी तरफ दश पग बढकर आगे आयेंगी । साक्षात् लक्ष्मीस्वरुपा के सानिध्य से हम धन्य हो गयी है । स्त्री भक्ताओं के लिये वे प्रेरणा की प्रत्यक्ष मूर्ति हैं । तथा साक्षात् लक्ष्मी हैं।

- प्रिया तथा डिम्पल - लंदन

पृष्ठ ५ का चालु...

के प्रत्येक तंतु में बहन का निर्व्याज हृदय का प्रेम रहता है। रक्षा का बंधन जीवन में उपयोगी ऐसे अनेकों बंधनों से रक्षा करता है। लोहे की बेडी को तोडने की सामर्थवाला ऐसा भाई; बहन के बंधन (रक्षासूत्र) को तोड नहीं सकता। वह अपनी मर्यादा का उल्लंधन नही कर सकता। रक्षा यह केवल सूत की डोरी नहीं है। यह शील तथा स्नेह का रक्षण करने वाला तथा जीवन में संयम की महत्ता को बतानेवाला बंधन है।

त्याग अपने श्रद्धा ना छेडा, भक्ति गांढ बंधाई।
निरपेक्ष बांधन बहेननी, साची प्रेम सगाई छे॥

भाई के हाथ में रक्षा बांधकर बहन भाई से अपनी रक्षा चाहती है। इतना ही नहीं बल्कि समस्त स्त्री अपने भाई की रक्षा चाहती है। साथ में बाह्य शत्रुओं तथा अन्तर्विकारो पर भाई की विजय हो या उनसे वह सुरक्षित रहे यह भावना उसके मन में रहती है।

वेदो में देवासुर संग्राम में देवो के विजय के लिए इन्द्राणी हिंमतहारे हुए इन्द्र के हाथ में रक्षा सूत्र बांधी थी। अभिमन्यु की रक्षा के लिये कुंती माताने राखी बांधी थी। जबकि अपनी रक्षा के लिये राणी कर्मवती हुमायु को राखी भेंजी थी। इस तरह रक्षा में उभय पक्ष की भावना भरी हुई है। परंतु इतनी ही इसकी मर्यादा नहीं है, रक्षा बंधन तो बंधन रक्षा का स्मारक है। बंधन रक्षा अर्थात् ध्येय रक्षा, जिसने जीवन में यह सोच लिया हो कि हम किसी ध्येय पथ पर जीवन का विकास कर सकेंगे। राखी बांधने के समय बहन अपने भाई के ध्येय की रक्षा हेतु संकल्पना करती है।

रक्षा बंधन के प्रसंग पर भाई बहन को कहता है। तुम्हारी रक्षा के लिये हम अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देंगे। फल स्वरुप रक्षा बंधन के बाद प्रतीक रुप में रुपये देता है। परंतु आज सभी के भावों में परिवर्तन सा दिखाई देने लगा है। मात्र व्यावहारिक प्रक्रिया रह गयी है। वास्तव में रक्षाबंधन बहन का भाई के प्रति निष्पाप, निर्मल तथा नि:स्वार्थ भावों के शुभेच्छाओं का प्रतीक है। बहन की शुभेच्छा भाई को उसके जीवन पथ पर आगे बढने के लिये प्रेरक एवं पोषक बनती है।

"स्त्री तरफ विकृत दृष्टि से न देखकर पवित्र दृष्टि रखो।" यह महान संदेश देने वाली भारतीय संस्कृति के इस श्रेष्ठ पर्व को कुटुम्ब तक मर्यादित कर दिया गया है। ऐसे पर्व का सामाजीकरण, वैश्वीकरण करना चाहिये। सगे भाई के प्रति कोई भी बहन की दृष्टि निर्मल, प्रेम से भरी रहने वाली ही है। आवश्यकता तो हैं समाज में स्त्री की तरफ विकार दृष्टि रखने वालो में परिवर्तन की। अपनी सगी बहन रक्षा बांधे उसकी अपेक्षा अपने समान उम्र की दूसरी कोई बहन रक्षा बांधे तो शीलता की वृद्धि की पराकाष्ठा कही जायेगी।

संक्षेप में रक्षाबंधन, स्त्री की तरफ देखने वालो के भाव (विचार) में परिवर्तन की आवश्यकता है।

रक्षाबंधन अर्थात् भाई बहन के विशुद्ध प्रेम का अस्खलित बहता हुआ झरना। भाई तथा बहन परस्पर प्रेरक-पूरक तथा पोषक है। यह संदेश देने वाला यह उत्सव भारतीय संस्कृति की अमूल्य देन है।

रक्षा बंधन आवे, भाईथी बहनने मलावे।
मंद हास्य करीने बहन, भाईने राखडी बांधे॥

पृष्ठ ६ का चालु...

ब्रह्मस्थितिवाले श्रोत्रिय सद्गुरु की शरणागति को प्राप्त करके परमतत्व को प्राप्त किया जा सकता है। देह रहते परमात्मा के प्राप्ति का अनुभव होने लगता है। मुक्तानंद स्वामी कहते हैं कि -

"गुरुजीना वचन रे, विचारी उर धारजो रे,
टाड़ो तमे मोह-ममता-अभिमान,
मुक्तानंद कहे छे, एवी रीते वर्तता रे,
तेने उच्वास करे भगवान.... सद्गुरु साचा रे"

प्रतिदिन लाखों की संख्या में छपने वाले दैनिक पत्रों की तरह यह निर्माल्य वात नहीं है, यह अनुभव की वात है। मोती की तरह अनमोल इन रहस्य भरी भजनों का एक एक करके बीनने की वात है। जिसे सुनकर हृदय में उतारने की वात है। सद्गुरु मुक्तानंद स्वामी कहते हैं कि जो सच्चे गुरु की शरणागति लेता है वह ममता-मोह रुपी झंझावात से दूर रहता है, अर्थात् सद्गुरु उसकी प्रत्येक क्षणों में रक्षा करते रहते हैं। सद्गुरु के हृदय में भगवान सदा विराजमान रहते हैं। इसलिये ऐसे भगवान के रुप में चलते-फिरते सद्गुरु हमें मिलें हैं इसलिये हम बड़े भाग्यशाली हैं जो प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा श्री नरनारायणदेव के आश्रित संत के रुप में हैं। इन्हीं की शरणागति में तथा इन्हीं की वाणी में अपना सर्वस्व समर्पण करके अपना हित करलेना श्रेयष्कर है।

प्रश्न पेटी ???

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ श्रीजी महाराजने जिस तरह कहा उसके अनुसार किस स्वरुप की उपासना करनी चाहिये ? वह किस में (कहां) या किस श्लोक में कहा है ?

प्रश्न : २ शिक्षापत्री के श्लोक नं. ६३ में श्रीजी महाराज क्या कहना चाहते हैं ?

प्रश्न : ३ "रसियोजी राय आंगण बैठा कोमल दातण करवाने मखमलनी गादी बहुमुली, पाट ऊपर पाथरवाने"..... इस पद के रचयिता कौन है ?

प्रश्न : ४ भागवत शास्त्र में दशम स्कंधके ५७ वें अध्याय में किस का प्रसंग आता है ?

प्रश्न : ५ श्रीजी महाराजने गृहस्थों को पांच महायज्ञ करने की आज्ञा की है उन पांच यज्ञों का क्या नाम हैं ?

प्रश्न : ६ मुक्तानंद स्वामी को एकवारज्वर आया, जिस कारण वे बजड़ी के आंटा की रोटी बनाकर खा रहे थे, उसी समय एक साधु मुक्तानदं स्वामी को आकर मिला, उसके बाद क्या हुआ ?

प्रश्न : ७ शरणागत मंत्र क्या हैं ?

जून२००८ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) प्रवक्ता - भगवान श्री स्वामिनारायण ।

(२) हरिलीलामृत क-८, वि-३०, स्वा. भगवान ।

(३) सद्गुरु आधारानंद स्वामी हरिलीलामृत सागर पुर-७ तरंग-५९ ।

(४) सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण इत्यादि की रचना प्रभु के गादी अभिषेक के बाद स्वामिनारायण भगवानने प्रकरण दूसरे में मांगरोल गाँव से प्रारम्भ की थी ।

(५) श्रीहरि के स्वधाम बाद तेरही के दिन पूंजा भगत डोडियाने प्रथम देह का त्याग किया था ।

(६) पातलिये हर्या प्राण रे, बेनी मारा..... पातलिये हर्या प्राण..... यह पद गाते-गाते ब्रह्मानंद स्वामीको गोपीनाथ महाराज की मूर्ति में से श्रीहरि प्रगट हुए तथा ब्रह्मानंद स्वामी को भेंटकर कहने लगे - "हूं तो सदाय गोपीनाथजीनी मूर्तिमां रह्यो छुं । तमे मने गयेलो जाणो छो ? तथा ब्रह्मानंद स्वामी को भेंटकर गुलाब का हार पहनाया ।"

(७) यदि सत्यवचन बोलने से अपना द्रोह होता हो तथा अन्य का द्रोह होता हो तो, ऐसे सत्य वचन कभी भीं नहीं बोलना चाहिये तथा जो कृतघ्नीं हों उनके संग का त्याग करना चाहिये, एवं व्यवहार कार्य के लिये घुस नहीं लेना चाहिये ।

१. माधवजीभाई हरखजीभाई आद्रोजा - मोरबी
२. भगवानजीभाई वेलजीभाई सोनी - मोरबी
३. सां.यो. उषाबा तथा शीतलबा - सुरेन्द्रनगर
४. हसुबहन के. ठक्कर - इसनपुर
५. सुमीयाबहन नरेशभाई भावसार - विसनगर
६. सां.यो. भारतीबा, मंजूबा - कालुपुर हवेली
७. वीणाबहन आर. भावसार - नवरंगपुरा
८. अरविंदाबहन एन. भावसार - चांदलोड़ीया
९. भावनाबहन कमलेशभाई खंधडिया - मोरबी
१०. कंचनबहन बाबूभाई पटेल - रतनपर
११. मेनाबहन डाह्याभाई - जासलपुर
१२. ज्योत्सनाबहन राजूभाई - आनंदपुरा

नोंट : प्रश्नपेटी विभाग के प्रश्नों का उत्तर देने वाले प्रेमीभक्तजनों से नम्र निवेदन है कि आगे से (अबसे) उत्तर स्वच्छ तथा अच्छे अक्षर, अच्छे कागज पर बगल में हांसिया छोड़कर लिखें, तथा एक कागज में एक ही नाम हो यह आवश्यक हैं । अधिक नाम होगा तो प्रकाशित नहीं किया जायेगा । प्रश्नों का उत्तर एक समान कागज पर तथा एक समान अक्षर से लिखा होना चाहिये । ऐसे प्रश्नों के उत्तर ही प्रकाशित किये जायेंगे ।

सत्संग समाचार

प.पू. लालजी महाराजश्री का ११ वां प्रागट्योत्सव सम्पन्न

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा परमपूज्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की उपस्थिति में आषाढ कृष्ण-१० ता. २८-७-०८ के शुभ मंगल अवसर पर संप्रदाय के श्री नरनारायणदेव पीठ के भावी आचार्य प.पू. लालजी १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ११ वां प्रागट्योत्सव संत-हरिभक्तों की विशाल उपस्थितिमें बड़ी सादगी के साथ सम्पन्न हुआ।

अहमदाबाद शहर में आंतकवादियों के बोम्ब कांड में अनेक लोगो के मरने से यह उत्सव बड़ी सादगी के साथ मनाने के लिये पू. बड़े महाराजश्रीने आज्ञा की थी। सर्व प्रथम प.पू. लालजी महाराजश्री अपने प्रिय दादाजी के साथ श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके सभा में विराजमान हुए थे। पंडितवर्यो ने स्वस्ति वाचन करके वेद परंपरागत पूजन विधिकी थी। इसके बाद पू. महंत स्वामी, पू. ध्यानी स्वामी इत्यादि वयोवृद्ध संतोने प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारकर पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। आज छोटे विद्यार्थी संतो में साधु अभयप्रकाशदास, साधु धर्मकिशोरदास, साधु भक्तिप्रकाशदास तथा बाल युवक हरिभक्तोंने अपने प्राण प्यारे पू. लालजी महाराज को प्रसन्न करने के लिये अपनी भावना व्यक्त करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव स्कीम कमेटी के सभी सदस्य तथा अग्रगण्य हरिभक्त समूह में आरती उतारकर तथा पूजन करके पू. लालजी महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

अहमदाबाद मंदिर द्वारा साहित्य प्रकाशन का कार्य बड़ी तेजी से चल रहा है। जिसमें स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित भक्त चिंतामणी ग्रंथका (पुनःप्रकाश) विमोचन प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से किया गया था। पू. लालजी महाराजश्री ने महंत स्वामी को प्रसन्नता का हार पहनाकर आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद, गांधीनगर, जेतलपुर, छपैया, नारायणघाट, नारायणपुरा, कांकरिया, मूली, सुरेन्द्रनगर, चराडवा, लींबडी, माणसा, धोलका, एप्रोच इत्यादि अनेक स्थलों से पधारे हुए संत पूज्य लालजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन किये थे। आज पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से काफी समय से नाराज इन्द्रदेव प्रसन्न होकर जलवृष्टि करके गुजरात की भूमि को तृप्त किये थे। कारण यह कि बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के अपर स्वरुप का ख्याल तो था ही।

अंत में सभी पर अतिप्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हुए बताये कि चाहे कितना भी प्रलोभन आवे तो भी अडिक रहकर श्री नरनारायणदेव का दृढ आश्रय कभी छोड़ना नहीं, इसी में सुख है। अहमदाबाद में आतंकवादियों ने निर्दोष लोगों को बोम्ब विस्फोट करके हत्या की है, इस का हमें अत्यंत दुःख है। सर्वोपरि श्रीहरि मृतात्माओं को शांति प्रदान करके तथा ऐसे कृत्य करनेवालों को सद्बुद्धि दे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

इसके बाद महाराजश्रीने भी अपने आशीर्वाद में बताया कि अहमदाबाद शहर में बोम्ब विस्फोट द्वारा आंतकवादियों ने आराजकता फैलाई है तथा वरसात भी तेज हो रहा है तो भी संत-हरिभक्त इतनी संख्या में उपस्थित होकर अपनी भावना व्यक्त की है। इससे हमें बड़ा आनंद हुआ है।

हम जब स्कूल में पढते थे तब कलियुग का इतना प्रभाव नहीं था। कारण यह कि इस देश के प्रधानमंत्री पंड़ित श्री जवाहरलाल नेहरु खुली गाड़ी में रोड पर निकलते तथा सभी का अभिवादन स्वीकार करते थे। आज के समय में कलियुग युवान होता जा रहा है। जिसे हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। आतंकवाद देश तथा दुनियां में चारो तरफ फैला हुआ है, उत्तरोत्तर बढ ही रहा है।

लालजी महाराजश्री भावी पीढी को खूब सुख दें तथा कुटुम्बपरिवार में भी सभी को प्रसन्न करें, एवं इनका इतिहास सुवर्णाक्षरों में लिखा जाय ऐसी सर्वावतारी श्रीहरि को प्रार्थना।

दूसरा एक संकल्प हुआ है - अपने आदि आचार्य जो हमारे दादा पूज्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के आगामी ज्येष्ठ मास में प्रागट्य का २०० वर्ष पूर्ण हो रहा है। उन्होंने अपने समय में सत्संग के लिये जो भी कार्य किया है उन्होंने सत्संग के लिये जो भी दिया है, उन सभी का प्रत्यक्ष दर्शन हो, इस हेतु से २०० वी जन्मजयन्ती आगामी ज्येष्ठ मास में भव्यता से मनाने का आचार्य महाराजश्री तथा हम संकल्प किये हैं। इस लिये सभी संत-हरिभक्त इस महोत्सव को मनाने के लिये कटिबद्ध हो जाय। ऐसी आज्ञा करके हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। अंत में अहमदाबाद में बोम्ब विस्फोट में मृतात्माओं की शांति के लिये श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की गई थी। इस सभा का संचालन शा. स्वामी हरिओंप्रकाशदासजी (संचालक, जेतलपुर वाड़ी) ने किया था।

इस महोत्सव के यजमान लंडन के निवासी श्री अशोकभाई नारणभाई पटेल तथा चि. श्रीहरिश्चन्द्र पटेलने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके, भेंट अर्पित करके तथा आरती उतारकर प.पू. लालजी महाराजश्री का अलौकिक आशीर्वाद प्राप्त किया था।

-शा. रामानुजदासजी

अहमदाबाद मंदिर में गुरु पूर्णिमा महोत्सव सम्पन्न

श्रीहरिने स्वयं अपनी बाहों में भरकर जिसे प्रतिष्ठित किये थे ऐसे इष्टदेव सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के शुभाश्रय में गुरु पूर्णिमा महोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया।

श्री स्वामिनारायण भगवान के ७वें वंशज श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री प्रात: ८-०० बजे जब मंदिर पधारे उस समय हजारों संत हरिभक्त दर्शन-आशीर्वाद की प्रतीक्षा कर रहे थे । इष्टदेवश्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती उतारकर प्रसादी की दिव्य सभा मंडप में सुंदर दिव्य सिंहासन पर विराजमान हुए थे। इसके बाद पंड़ितो ने स्वस्ति वाचन करके पूजन-अर्चन वेदपरम्परागत ढंग से किया था। पू. महंत स्वामीने तथा बड़े संतोने आरती उतारकर पुष्पहार पहनाकर गुरु पूजन किया था। श्री नरनारायणदेव देश स्कीम कमेटी के सभी सदस्य समूह आरती करके गुरु पूजन किये थे। इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर द्वारा पू. महंत स्वामी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से "तमे मीठुं बोलोने" इस शीर्षक से बाल कलाकारश्री रिंकेश पटेल (जयपुर) के स्वर में गाये हुए की ओडियो सीडी जो अ.नि. श्रीमती माणेकबहन कालीदास पटेल (भगवानपुरा ता. कलोल) सुपुत्र श्री कांतिभाई पटेल (साउथ कोरिया) की तरफ से तैयार की गई थी । इसका संकल्प साधु धर्मकिशोरदास तथा श्री प्रवीण पटेल ने किया था। जिसका विमोचन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से किया गया था। आज नाना देश से संत महंत पधारे थे। तथा अपने धर्मगुरु के पूजन के लिये आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे। विदेश से भी हजारों की संख्या में भक्तलोग उपस्थित थे । सर्वप्रथम संतोने गुरु पूजन-अर्चन करके पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किया था। इसके बाद श्रीहरि के सभी हरिभक्त अनुशासित ढंग से लाइन में दर्शन आशीर्वाद का लाभ लिया था। गुरु पूजन का सतत चार घंटे तक सभीने लाभ लिया था। प्रत्येक हरिभक्त को विना पूजन के पानी पीना नहीं था। वर्ष में एक ही बार आने वाले इस गुरुपूजन महोत्सव का आज सभी को लाभ मिला था। जिससे अपना मोक्ष तथा कल्याण इसी में समाहित है। अहमदाबाद मंदिरमें कोठारी स्वामीने तथा संत-पार्षद मंडल के साथ सभा मंडप को खूब कलात्मक ढंग से रंग बिरंगी साड़ियों से तथा ध्वजापताका से अलंकृत किया था। आज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री खूब प्रसन्न थे। जिससे अपने आश्रितों को गुरु पूर्णिमां के शुभ अवसर पर हार्दिक आशीर्वाद देकर एक वर्ष खाता पूर्ण कर दिया था।(पू. महाराजश्री का आशीर्वाद इस अंक में प्रकाशित किया गया है) इस प्रसंग पर गुरु पूर्णिमा का माहात्म्य चराडवा के महंत शा. स्वामी हरिप्रकाशने समझाया था।

गुरु पूर्णिमा के पूजन के यजमान श्री शामजीभाई लालजीभाई भुडिया के सुपुत्र श्री मनजीभाई शामजीभाई भुडीया, पौत्र राजेश तथा दीपक गाम फोटडी (कच्छ) (वर्तमान में लंडन) थे। आज का प्रसंग अति धन्य तथा आनंददायी था। *- साधु धर्मकिशोरदास*

अहमदाबाद मंदिर द्वारा आयोजित सत्संग सभाएँ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत स्वामी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से कोठारी शास्त्री स्वामी रामानुजदासजी तथा शास्त्री धर्मकिशोरदासजी आदि संत मंडलने पीछले महिने में चांदखेडा, जनतानगर, जीवराजपार्क, धाटलोड़िया तथा लुणावाडा गांव में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। सबसे पहले संतोने ठाकुरजी की आरती उतारकर कीर्तन भक्ति धून की थी। उसके बाद सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान का माहात्म्य-महिमा तथा उनके अनेक दृष्टांत देकर समझाया। साथ-साथ धर्मकुल-धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री का माहात्म्य भी समझाया। हरिभक्तों को कथा-वार्ता तथा सत्संग की तीव्र भूख होती है। और उसमें भी संत का समागम हो तो उनमें घंटो नीकल जाते हैं। इस प्रकार हमारे संत लोगो को जब कथा-वार्ता करने का आमंत्रण मिलता तो वहाँ जाकर उनकी जिज्ञासा को संतोषते हैं। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री संतो की इस प्रवृति से अति प्रसन्न है। *- कल्पेश पटेल*

श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा के विषय में

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण द्वारा आयोजित पूर्व आयोजित केन्द्रो पर ता. २३-१२-०८ को ली जायेगी। संचालक मित्रों को निवेदन है कि निश्चित केन्द्रो पर से परीक्षा देने वाले विद्यार्थीओं की यादी तथा माहिती अवश्य भेज दे। नये केन्द्र जहाँ चालु किये जायेंगे वहाँ धार्मिक परीक्षा का एक सेट भेज दिया जाएगा।

- श्री.न.ना.देव धार्मिक विभाग,

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद

ईडर मंदिर का १६३ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत जगदीशप्रसाददासजी स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज का १६३ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से देवो का अभिषेक विधिकिया गया। अन्नकूट की आरती करके पू. महाराजश्री सभा में पधारे थे। लालोडा के पटेल सांकाभाई मुलचंदभाई के परिवारने महाराजश्री का स्वागत करके, आरती उतारी तथा भेट प्रदान करके दिव्य आशीर्वाद प्राप्त किये।

सभा में पूज्य पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) तथा वडनगर, सोकली, टोरडा, हिंमतनगर, प्रांतीज, लालोडा आदि धाम के संतोने प्रवचन किये थे। कमिटी के सभ्य डॉ. के.के. पटेलने भी उद्बोधन किया था। पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा कि, आज के युग में माता-पिता को संतानो को वारसागत सत्संग का गुण प्रदान करने की अति आवश्यकता है। अंत में महंतश्री तथा कोठारी सत्यसंकल्प स्वामीने इडर के विकास की सराहना कि थी।

सभा संचालन शास्त्री हरिजीवन स्वामीने इडर मंदिर के सुवर्ण

कलश महोत्सव की रुपरेखा की घोषणा की थी।

मणीयोर में पधरामणी

मणीयार निवासी डी.के. पटेल तथा मोहनभाई के घर पू. महाराजश्रीने पधरामणी की तथा उनका स्वागत आरती-पूजन से किया गया। महाराजश्रीने अल्पाहार करके आशीर्वाद प्रदान किये।

- साधु सत्यसंकल्पदासजी

लुणावाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर

लुणावाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल का १६ वां वार्षिकोत्सव छपैयाधाम सोसायटी मे निर्मित हो रहे मंदिर में धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर अमहदाबाद मंदिर के कोठारी शास्त्री स्वामी रामानुजदासजी तथा शा.स्वा. हरिजीवनदासजी पधारे थे। सत्संग सभा में चातुर्मास के नियमों की सुंदर बातें समझायी। युवानो को नियम दिलवाकर उन्हें सही मार्ग बताया था।

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा से सा. बचीबा तथा सा. नर्मदाबा की प्रेरणा से अ.नि. पूज्यश्री प्रफुल्लकुमार द्विवेदी के स्मरण हेतु श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण यहाँ की सत्संगी बहनो की तरफ से की गयी। सां.यो. सविताबहन (गु.सा. बचीबा जेतलपुर) के वक्तापद पर ता. ६-७-०८ से ता. १२-७-०८ के पर्यन्त आयोजन किया था। सां.यो. रंजनबहनने इस प्रसंग का आयोजन किया था।

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर

आषाढ शुक्ल पक्ष-१० के शुभ दिन पर प.पू. बड़े महाराजश्री भी वन विचरण के प्रसंग का दर्शन करने पधारे थे। तथा अति प्रसन्न हुए थे।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा धर्मकुल के आशीर्वाद से हर एकादशी के दिन जागरण तथा हर शनिवार की रात्रि में विशेष सत्संग सभा का आयोजन होता है। बहनें भी हर शनिवार रात्रि में विशेष सभा का आयोजन करती है। ता. १०-७-०८ के दिन प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारे थे। चातुरमास में जिन बहनो ने एकादशी की थी रात्रि में जागरण किया था। उनकों अपने वरद् हाथों से शिक्षापत्री भाष्य तथा शनिवार की सभा में उपस्थित प्रत्येक बहनो को संत समागम पुस्तक भेट स्वरुप दी थी।

- गोरधनभाई सीतापरा

दोलाराणा वासणा

श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज के वार्षिक पाटोत्सव प्रसंग ता. ५-६-०८ के दिन, श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक, समूह महापूजा। अन्नकूट आदि कार्यक्रम धूमधाम से संपन्न हुआ।

इस पाटोत्सव प्रसंग पर शास्त्री स्वामी नारायणवलभदासजीने समूह महापूजा तथा श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के माहात्म्य की सत्संग द्वारा कथा की थी। अंत में महामंत्र धून के साथ प्रसंग पूर्ण किया गया।

- हार्दिक भगत गु.शा. छपैयाप्रसाददास

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

सायला मंदिर द्वारा रथयात्रा दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद आज्ञा से सायला नगर में आषाढी दूज के दिन सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण भगवान की रथयात्रा निकाली गई थी। इस यात्रा में बच्चो द्वारा लाठी लाठीदाव, तलवार बाजी, गामठी देशी नृत्य - आदि अंग कसरत के दाव करके लोंगो को आश्चर्यचकित कर दिया था। शा.स्वामी नारायणस्वरुपदासजीने मार्गदर्शन अनुसार शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासने सुंदर व्यवस्था की थी।

- रणधीरसिंह झाला

लींबडी मंदिर में (तीनो) वुरु पूर्णिमा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के तीनों मंदिरो में ठाकुरजी का पूजन, अर्चन, आरती की गई। श्री नरनारायणदेव पीठके ६ठे, ७वें तथा ८वें वंशज का पूजन-अर्चन किया गया। प्रसादी के खड़ाऊके दर्शन करके सभी हरिभक्त भाव विभोर हो गये। नये नियुक्त हुए महंत स्वामी भक्तवत्सलदास का सत्संग समाज तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सन्मान किया था। सभा संचालन पूजारी वंदनप्रकाश तथा सी.सी. पटेलने किया था।

- पूजारी स्वामी

धांगधा बहनों के श्री स्वामिनारायण मंदिर

धांगधां बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आशीर्वाद सह आज्ञा से सा.यो. कंचनबा, हीराबा तथा भगवतीबा की प्रेरणा से प्रत्येक एकादशी की शाम को ५ बजे स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के १०० कीर्तन गाये जातें है। सभा का १०० से भी अधिक बहनो लाभ लेती हैं।

- जयश्रीबहन सोनी

स्वारवरेची श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से आषाढ शुक्लपक्ष-५ के दिन श्री स्वामिनारायण महामंत्र की ६ घंटे तक धून की गयी थी। संतगण यहाँ पर श्री राधाकृष्ण देव तथा श्री नरनारायणदेव गादी के प्रति पूर्ण निष्ठापूर्वक वफादारी तथा नियम निश्चय का पालन करने का बोधदिया था।

- प्रभु भगत

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O. अमेरिका)

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से निर्जला एकादशी का महापूजा का आयोजन किया गया था। महंत स्वामी सिद्धेश्वरदासजी की प्रेरणा से महापूजा विधिश्री रोहित पंड्याने करवायी थी। यह पूजा विधितीन घंटे तक चली थी। भाई-बहनोंने होल में बैठकर सुंदर महापूजा का लाभ लिया था। यजमान परिवार का मंदिर द्वारा महंत स्वामीने तथा ट्रस्टी मंडलने स्वागत किया था। अंत में जनमंगल का पाठ, संध्या आरती तथा भोग का आयोजन करके प्रसंग की पूर्णाहुति की गयी थी।

प्रविणभाई शाह

वोशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर, अमेरिका)

वोशिंग्टन बुवी मेरीलेन्ड में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से १५ जून रविवार की शाम ४ से ७ तक सर्वनापर्क कम्युनिटी सेन्टर के होल में विशाल सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिसमें भजन-कीर्तन-वचनामृत (२७३) की कथा, भोग-आदि प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

-कनुभाई पटेल

एटलान्टा श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O. चेप्टर, अमेरिका)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से I.S.S.O. संस्थापित श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा का प्रथम पाटोत्सव ११ जुलाई से १३ जुलाई तक धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिभूषण त्रिदिनात्मक पारायण फ्लोरिडा मंदिर के संत शा. स्वामी छपैयाप्रसादासजी के वक्तापद पर हुई थी। जिसमें श्री घनश्याम महाराज के पार्दुभाव अंतर्धान तक की लीला चरित्र का वर्णन किया गया था। कथा दरम्यान श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रथम आरती कालवाणी में स.गु. मुक्तानंद स्वामीने की थी उसी प्रकार की गयी। जिसका अलभ्य लाभ प.भ. किरीटभाई पटेल तथा प.भ. राजेशभाई पटेलने लिया था। कथा की पूर्णाहुति के समय सभी सत्संगीओं को प.पू. बड़े महाराजश्रीने फोन द्वारा आशीर्वाद प्रदान किये थे।

इस प्रसंग में एटलान्टा की बहनोंने बहुत ही श्रद्धा-भक्तिपूर्वक सेवा करके ठाकुरजीकी आरती हेतु १०८ से भी अधिक पक्कवान बनाये थे। धन्य है बबनो की यह सेवा को।

-एटलान्टा सत्संग मंडल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के द्वारा निर्मित मंदिरो के नये महंत स्वामी की यादी

न्यु दिल्ही : श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स.गु. स्वामी देवप्रदाददासजी (अयोध्या मंदिर के महंत) गुरु स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी)

लींबडी (मूलीप्रदेश) : श्री स्वामिनारायण मंदिर (छालीयापरा) के महंत साधु भक्तवत्सलदासजी गुरु स्वामी सत्संगप्रकाशदासजी।

मकनसर (ता. मोरबी-मूलीदेश) : श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स.गु. स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी गुरु स.गु. स्वामी अक्षरस्वरुपदासजी (मूली)।

सापावाडा : श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स.गु. स्वामी नंदकिशोरदासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिनारायणदासजी स्वामी कृष्णजीवनदासजी तथा स.गु. शास्त्री स्वामी हरिजीवनदासजी (महुन्द्रावाले)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद : प.भ. रतीभाई जेचंदभाई भावसार ता. २३-७-०८ के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये।

झाड (दहेगाम) : प.भ. शारदाबा पुरुषोत्तमदास पटेल ता. १२-६-०८ के दिन श्रीजी महाराज का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये।

सुरत : प.भ. मणीभाई फुलाभाई पटेल (साधीवाला श्री परेशभाई पटेल लंडनवाला के पिताश्री) श्रीजी महाराज का अकंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।













(१) गुरुपूर्णिमा के प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री का आरती उतारते हुए महंत स्वामी तथा यजमान श्री मनजीभाई शामजीभाई भुडीया एवं चि. राजेश तथा रवि आदि परिवार - फोटडी (कच्छ) वर्तमान में लंदन । (२) प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रागट्योत्सव प्रसंग पर प.पू. बडे महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में प्रागट्योत्सव की आरती करते हुए यजमान श्री अशोकभाई तथा उनके पुत्र श्री हेरन्द्र मांडवी (कच्छ) वर्तमान में लंडन । (३-४) अपने एटलान्टा (I.S.S.O. अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रथम पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन तथा सभा में कीर्तन भक्ति करते हुए हरिभक्त । (५) श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर, श्री घनश्याम महाराज का श्री नीलकंठवर्णी के रूप में दर्शन । (६) अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08













(१-२-३) गुरुपूर्णिमा के प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर में श्रीहरि के तीनो अपर स्वस्म ठाकुरजी की आरती उतारते हुए ।

(४) गुरुपूर्णिमा प्रसंग पर समस्त आश्रितों को आशीर्वाद देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

(५) प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रागट्योत्सव प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।

(६) ११ वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर बाल स्वस्म प.पू. लालजी महाराजश्री खूब आनन्द की मुद्रा में आशीर्वाद देते हुए ।

(079) 26580916, 9879006686